पु•ना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class-9

Hindi

Specimen Copy

S.A-2

2022-23

पाठ-सूची

क्रमांक	माह	पाठ का नाम	लेखक का नाम
०१	अक्तूबर	पाठ-१३-गीत अगीत	रामधारी दिनकर
०२		संचयन पाठ-हामिद खां	एस.के पोटटेकाट
०३	नवंबर	पाठ-15-नए इलाके में ---	अरूण कमल
०३		संचयन पाठ-६-दीये जल उठे	मधुकर उपाध्याय
०४	दिसम्बर	पाठ-८-शुक्र तारे के समान	स्वामी आनंद
		व्याकरण - विरामचिह्न संधि शुद्ध अशुद्ध वर्तनी	
०५			
०७			

पाठ-13-गीत अगीत

रम२अरि दिनकर

प्रस्तुत कविता 'गीत-अगीत' में कवि ने प्रकृति की सुंदरता के साथ-साथ जीव-जंतुओं के प्रति प्रेम, मानवीय राग और प्रेमभाव का भी सजीव चित्रण किया है। कविता के प्रथम भाग में नदी के बहने से जो सुन्दर दृश्य दिखाई देता है कवि ने उसका बहुत सुन्दर वर्णन किया है। कवि कहता है कि नदी किसी के बिछड़ने के दुःख में दुखी होते हुए गीत गाते हुए बड़ी तेजी से बह रही है।

ऐसे में लगता है कि वह अपना दुःख कम करने के लिए किनारों से कुछ कहती हुई बहती जा रही है। किनारे के पास में ही एक गुलाब चुपचाप यह सब देख रहा है और अपने मन में सोच रहा है कि यदि भगवान ने उसे भी बोलने की शक्ति दी होती तो वह भी पूरी दुनिया को अपने सपनों के गीत सुनाता।

कविता के दूसरे भाग में कवि तोता और मादा-तोता के प्रेम का सुन्दर वर्णन करता हुआ कहता है कि एक तोता पेड़ की उस घनी डाली पर बैठा हुआ है जो डाल उसके घोंसलें को छाया देती है। उसी घोंसलें में उस तोते की मादा अपने पंखों को फैला कर अपने अंडे से रही है। कवि कहता है कि जब सूर्य की किरणें पत्तों से छनकर आती हैं और तोते के पंखों का स्पर्श करती हैं तो तोता गाना गाने लगता है।

उसका गाना सुनकर उसकी मादा भी गाना चाहती है लेकिन उसका गीत केवल तोते के प्यार में लिपट कर रह जाता है और उसके मुँह से कुछ नहीं निकलता। मादा उसका गीत सुनकर फूले नहीं समा रही है। कविता के तीसरे भाग में कवि दो प्रेमियों का वर्णन करता हुआ कहता है कि दोनों प्रेमियों में से जब एक प्रेमी शाम के समय कोई लोक गीत गाता है

तो उसकी प्रेमिका उस गाने को सुनने के लिए अपने घर से वन की ओर खिंची चली आती है। वह चोरी से छुप-छुप कर अपने प्रेमी का गाना सुनती है और मन में सोचती है कि वह उस गीत का हिस्सा क्यों नहीं बनती। कवि यह सब देखकर सोच रहा है कि मेरे द्वारा गया गया गीत सुन्दर है या प्रकृति के द्वारा न गा सकने वाला अगीत सुन्दर है?

पाठ व्याख्या

(1)

गाकर गीत विरह के तटिनी
वेगवती बहती जाती है,
दिल हलका कर लेने को
उपलों से कुछ कहती जाती है।
तट पर एक गुलाब सोचता
"देते स्वर यदि मुझे विधाता,
अपने पतझर के सपनों का

मैं भी जग को गीत सुनाता।“
गा गाकर बह रही निर्झरी,
पाटल मूक खड़ा तट पर है।
गीत, अगीत, कौन सुंदर है?

शब्दार्थ -
तटिनी - नदी, तटों के बीच बहती हुई
वेगवती - तेज़ गति से
उपलों - किनारों से
विधाता - ईश्वर
निर्झरी - झरना, नदी
पाटल - गुलाब

व्याख्या - कविता के इस भाग में नदी के बहने से जो सुन्दर दृश्य दिखाई देता है कवि ने उसका बहुत सुन्दर वर्णन किया है। कवि कहता है कि नदी को बहता हुआ देखते हुए ऐसा लगता है जैसे नदी किसी के बिछड़ने के दुःख में दुखी होते हुए गीत गाते हुए बड़ी तेजी से बह रही है। ऐसे में लगता है कि वह अपना दुःख कम करने के लिए किनारों से कुछ कहती हुई बहती जा रही है। कवि कहता है कि किनारे के पास में ही एक गुलाब चुपचाप यह सब देख रहा है और अपने मन में सोच रहा है कि यदि भगवान ने उसे भी बोलने की शक्ति दी होती तो वह भी पूरी दुनिया को अपने सपनों के गीत सुनाता। झरना भी बह-बह कर गीत गा रहा है और गुलाब किनारे पर चुपचाप खड़ा है। कवि यह सब देखकर सोच रहा है कि मेरे द्वारा गया गया गीत सुन्दर है या प्रकृति के द्वारा न गा सकने वाला अगीत सुन्दर है?

(2)
बैठा शुक उस घनी डाल पर
जो खोंते को छाया देती।
पंख फुला नीचे खोंते में
शुकी बैठ अंडे है सेती।
गाता शुक जब किरण वसंती
छूती अंग पर्ण से छनकर।
किंतु, शुकी के गीत उमड़कर
रह जाते सनेह में सनकर।
गूँज रहा शुक का स्वर वन में,
फूला मग्न शुकी का पर है।
गीत, अगीत, कौन सुंदर है?

शब्दार्थ -

शुक - तोता

खोंते - घोंसला

पर्ण - पत्ता, पंख

शुकी - मादा तोता

व्याख्या - कविता के इस भाग में कवि तोता और मादा-तोता के प्रेम का सुन्दर वर्णन करता हुआ कहता है कि एक तोता पेड़ की उस घनी डाली पर बैठा हुआ है जो डाल उसके घोंसलें को छाया देती है। उसी घोंसलें में उस तोते की मादा अपने पंखों को फैला कर अपने अंडे से रही है। कवि कहता है कि जब सूर्य की किरणें पत्तों से छनकर आती हैं

और तोते के पंखों का स्पर्श करती हैं तो तोता गाना गाने लगता है। उसका गाना सुनकर उसकी मादा भी गाना चाहती है लेकिन उसका गीत केवल तोते के प्यार में लिपट कर रह जाता है और उसके मुँह से कुछ नहीं निकलता।

उधर तोते का गीत पूरे वन में गूँज रहा है और इधर उसकी मादा उसका गीत सुनकर फूले नहीं समा रही है। अर्थात वह बहुत खुश है। कवि यह सब देखकर सोच रहा है कि मेरे द्वारा गया गया गीत सुन्दर है या प्रकृति के द्वारा न गा सकने वाला अगीत सुन्दर है?

(3)

दो प्रेमी हैं यहाँ, एक जब
बड़े साँझ आल्हा गाता है,
पहला स्वर उसकी राधा को
घर से यहीं खींच लाता है।
चोरी-चोरी छिपकर सुनती है,
'हुई न क्यों मैं कड़ी गीत की
बिधना', यों मन में गुनती है।
वह गाता, पर किसी वेग से
फूल रहा इसका अंतर है।
गीत, अगीत कौन सुंदर है?

शब्दार्थ -

आल्हा - एक लोक-गीत का नाम

कड़ी - वे छंद जो गीत को जोड़ते हैं

बिधना - भाग्य, विधाता

गुनती - विचार करती है

वेग - गति

व्याख्या - कविता के इस भाग में कवि दो प्रेमियों का वर्णन करता हुआ कहता है कि वन में दो प्रेमी रहते हैं। दोनों प्रेमियों में से जब एक प्रेमी शाम के समय कोई लोक गीत गाता है तो उसकी प्रेमिका उस गाने को सुनने के लिए अपने घर से वन की ओर खिंची चली आती है। वह चोरी से छुप-छुप कर अपने प्रेमी का गाना सुनती है और मन में सोचती है कि वह उस गीत का हिस्सा क्यों नहीं बनती। जब प्रेमी गाता है तो प्रेमिका का मन प्रसन्नता से फूले नहीं समाता है। कवि यह सब देखकर सोच रहा है कि मेरे द्वारा गया गया गीत सुन्दर है या प्रकृति के द्वारा न गा सकने वाला अगीत सुन्दर है?

गीत अगीत प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

प्रश्न 1 - नदी का किनारों से कुछ कहते हुए बह जाने पर गुलाब क्या सोच रहा है? इससे संबंधित पंक्तियों को लिखिए।

उत्तर - जब नदी अपना दुःख कम करने के लिए किनारों से कुछ कहती हुई बह रही है तो किनारे पर एक गुलाब सोचने लगता है कि यदि भगवान उसे बोलने की शक्ति दी होती तो वह भी अपने सपनों के गीत सबको सुनाता। इससे संबंधित पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं –

“देते स्वर यदि मुझे विधाता,
अपने पतझर के सपनों का
मैं भी जग को गीत सुनाता।“

प्रश्न 2 - जब शुक गाता है, तो शुकी के हृदय पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर - जब सूर्य की किरणें पत्तों से छनकर आती हैं और तोते के पंखों का स्पर्श करती हैं तो तोता गाना गाने लगता है। उसका गाना सुनकर उसकी मादा भी गाना चाहती है लेकिन उसका गीत केवल तोते के प्यार में लिपट कर रह जाता है और उसके मुँह से कुछ नहीं निकलता। उधर तोते का गीत पूरे वन में गूँज रहा है और इधर उसकी मादा उसका गीत सुनकर फूले नहीं समा रही है।

प्रश्न 3 - प्रेमी जब गीत गाता है, तो प्रेमी की क्या इच्छा होती है?

उत्तर - जब प्रेमी गीत गाता है तो प्रेमिका चोरी से छुप-छुप कर अपने प्रेमी का गाना सुनती है और मन में सोचती है कि वह उस गीत का हिस्सा क्यों नहीं बनती।

प्रश्न 4 - प्रथम छंद में वर्णित प्रकृति चित्रण को लिखिए।

उत्तर - कविता के प्रथम छंद में नदी के बहने से जो दृश्य उत्पन्न होता है उसका कवि ने मनोहारी वर्णन किया है। नदी विरह के गीत गाते हुए बड़ी तेजी से बह रही है। ऐसा लगता है जैसे नदी किसी के बिछड़ने के दुःख में दुखी होते हुए गीत गाते हुए बड़ी तेजी से बह रही है। ऐसे में लगता है कि वह अपना दुःख कम करने के लिए किनारों से कुछ कहती हुई बहती जा रही है। कवि कहता है कि किनारे के पास में ही एक गुलाब चुपचाप यह सब देख रहा है और अपने मन में सोच रहा है कि यदि भगवान ने उसे भी बोलने की शक्ति दी होती तो वह भी पूरी दुनिया को अपने सपनों के गीत सुनाता। झरना भी बह-बह कर गीत गा रहा है और गुलाब किनारे पर चुपचाप खड़ा है।

प्रश्न 5 - प्रकृति के साथ पशु पक्षियों के संबंध की व्याख्या कीजिए।

उत्तर - प्रकृति के साथ पशु पक्षियों का गहरा संबंध है। पशु पक्षी प्रकृति के बिना जीवित नहीं रह सकते। प्रकृति ही उन्हें आवास प्रदान करती है और भोजन प्रदान करती है।

प्रश्न 6 - मनुष्य को प्रकृति किस रूप में आंदोलित करती है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - मनुष्य को प्रकृति भिन्न रूपों में आंदोलित करती है। जब मनुष्य किसी कल कल बहती नदी को देखता है तो उसके संगीत में खो जाता है। जब मनुष्य हल्की बारिश देखता है तो उसमें सराबोर होना चाहता है। लेकिन जब तेज तूफान आता है तो मनुष्य उससे बचकर किसी सुरक्षित ठिकाने पर चला जाता है।

प्रश्न 7 - सभी कुछ गीत है, अगीत कुछ नहीं होता। कुछ अगीत भी होता है क्या? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - जब हमारी भावना हमारे होठों पर लयबद्ध तरीके से बाहर आती है तो उसे गीत कहते हैं। जब कोई भावना अंदर ही रहती है तो उसे अगीत कहते हैं। कभी कभी अगीत भी गीत बनकर स्फुटित हो उठता है। और प्रकृति के द्वारा किए गए शब्दों से कवि भी हैरान है और समझ नहीं पा रहा है कि कवि की भावनाऐं जो गीत बन कर बाहर आई है वह सुन्दर है या प्रकृति के बिना शब्दों वाला संगीत सुन्दर है।

प्रश्न 8 - 'गीत अगीत' के केंद्रीय भाव को लिखिए।

उत्तर - इस कविता में कवि ने प्रत्यक्ष भावना और छुपी हुई भावना की तुलना की है। यह तुलना प्रकृति में छुपे अनेक सौंदर्य के सहारे से की गई है। नदी के गाने की तुलना गुलाब के मौन रहने से की गई है। शुक के गाने की तुलना शुकी के मौन से की गई है। प्रेमी के गाने की तुलना प्रेमिका के मौन से की गई है। इस तरह से इस कविता में कवि ने गीत और अगीत के माध्यम से प्रकृति का बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया गया है।

संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए

प्रश्न 1 - अपने पतझर के सपनों का मैं जग को गीत सुनाता

उत्तर - ये पंक्ति कविता के उस भाग से ली गई है जिसमें नदी की सुंदरता का वर्णन है। जब नदी गीत गाते हुए और किनारों से बातें करते हुए आगे बढ़ती है तो गुलाब चुपचाप यह सोचता है कि अगर भगवान ने उसे भी बोलने की शक्ति दी होती तो वह भी दुनिया को अपने सपनों के बारे में गा गाकर सुनाता।

प्रश्न 2 - गाता शुक जब किरण वसंती छूती अंग पर्ण से छनकर

उत्तर - ये पंक्ति कविता के उस भाग से ली गई है जिसमें शुक और शुकी के प्रेम का वर्णन है। जब पत्तियों से छनकर आने वाली किरणें तोते के पंखों का स्पर्श करती हैं तो तोता गाने लगता है।

प्रश्न 3 - हुई न क्यों मैं कड़ी गीत की बिधना यों मन में गुनती है

उत्तर - ये पंक्ति कविता के उस भाग से ली गई है जिसमें प्रेमी और प्रेमिका का वर्णन है। जब प्रेमी गीत गाता है तो प्रेमिका सोचती है कि कितना अच्छा होता यदि वह उस गीत का एक हिस्सा बन जाती।

संचयन - पाठ-5-हामिद खां

हामिद खां-सार:-

प्रश्न–एस. के. पोट्टेकाट द्वारा रचित 'हामिद खाँ' नामक पाठ का सार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर–'हामिद खाँ' कहानी हिंदू मुसलिम एकता का पाठ पढ़ाती है। कहानी का सार इस प्रकार है–

लेखक तक्षशिला में–दो साल पहले लेखक पाकिस्तान में तक्षशिला के खंडहर देखने गया था। वह रेलवे स्टेशन के पास स्थित एक गाँव में निकल पड़ा। वहाँ की गलियाँ तंग, घनी तथा बेतरतीब थीं। जगह जगह धुएँ, मच्छर और गंदगी का साम्राज्य था। चमड़े की बदबू आ रही थी। लंबे कद के पठान अलमस्त चाल से घूम रहे थे। लेखक किसी होटल की तलाश में था।

हामिद के होटल में–लेखक को तलाशते-तलाशते एक होटल मिला। एक अधेड़ पठान अँगीठी के पास सिर झुकाए चपातियाँ बना रहा था। वह लेखक को तीखी नजरों से देखने लगा। लेखक के मुसकराने पर भी वह नहीं मुसकराया। लेखक ने पूछा–खाने को कुछ मिलेगा?

पठान ने बेंच पर बैठने का इशारा करके कहा–'चपाती और सालन है।' थोड़ी देर बाद पठान ने लेखक का परिचय पूछा। उसे हिंदू जानकर उसने पूछा–वह हिंदू होकर एक मुसलमान के होटल में खाना कैसे खाएगा। लेखक ने बताया कि वह हिंदुस्तान में मद्रास के आगे मालाबार नामक स्थान पर रहता है। उनके यहाँ हिंदू-मुसलमान का कोई भेद नहीं है। वे बढ़िया चाय और पुलाव खाने के लिए हमेशा मुसलमानी होटल में ही जाते हैं। मुसलमानों की भारत में बनी पहली मसजिद भी उन्हीं के एक राज्य में है। उनके यहाँ हिंदू-मुसलिम दंगे भी न के बराबर होते हैं।

हामिद का दुख–हामिद लेखक की बातों पर विश्वास न कर सका। बोला–काश! मैं आपके मुल्क में जाकर अपनी आँखों से यह सब देख सकता। हामिद ने दुखपूर्वक कहा–पाकिस्तान के हिंदू ऐसी बातें फख्र के साथ किसी मुसलमान से नहीं कह सकते। वे मुसलमानों को अत्याचारियों की संतान मानते हैं। इसलिए पाकिस्तान में रहकर उन्हें अपने सम्मान को बचाना कठिन हो जाता है।

प्रेमपूर्ण भोजन–हामिद ने अपने नौकर अब्दुल को जोर की आवाज लगाई। उसने पश्तो भाषा में लेखक के लिए खाना बनाने का आदेश दिया। हामिद बोला–"आप मुहब्बत और ईमानदारी से मेरे होटल में खाना खाने आए हैं। इस बात का मेरे दिल पर गहरा असर है। अगर सभी हिंदू और मुसलमान आपस में मुहब्बत करते तो कितना अच्छा होता!"

भोजन आया। थाली में चावल, चपातियाँ और सालन लगे थे। लेखक ने बड़े चाव से खाना खाया। उसके बाद उसने पैसे निकाले किंतु हामिद ने लेखक का हाथ रोक लिया। बोला–आप मेरे मेहमान हैं। आपसे पैसे नहीं लूँगा। लेखक ने कहा–एक दुकानदार के नाते आपको पैसे लेने पड़ेंगे। यह कहकर उसने एक रुपये का नोट हामिद की ओर बढ़ा दिया।

हामिद का पैसे लौटाना–हामिद ने लेखक का मन रखने के लिए उससे एक रुपये का नोट ले लिया। परंतु उस नोट को फिर से लेखक की हथेली पर रखकर कहा–*"मैं चाहता हूँ कि यह आप ही के हाथों में रहे। आप जब पहुँचें तो किसी मुसलमानी होटल में जाकर इस पैसे से पुलाव खाएँ और तक्षशिला के भाई हामिद खाँ को याद करें।"*

लेखक भावविभोर हो गया। उसके बाद वह तक्षशिला के खंडहर देखने चला गया। आज भी हामिद के प्रेम की याद उसके दिल में ताजा है। आज जब उसने यह समाचार सुना कि तक्षशिला में भीषण सांप्रदायिक दंगा हुआ है, तो उसने मन-ही-मन प्रभु से प्रार्थना की कि भगवान दंगे की चिंगारियों से उसके हामिद भाई को सुरक्षित रखे।

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर -

प्रश्न 1 - लेखक को हामिद खाँ की याद क्यों आई?

(क) पाकिस्तान में आग लगने की खबर सुन कर

(ख) तक्षशिला में आग लगने की खबर सुन कर

(ग) हामिद की दूकान में आग लगने की खबर सुन कर

(घ) शरारती तत्वों द्वारा लेखक के पड़ोस में आग लगा देने के कारण

प्रश्न 2 - लेखक को तक्षशिला में आग लगने की खबर सुन कर किसकी याद आई?

(क) हामिद खाँ की

(ख) तक्षशिला के खण्डरों की

(ग) हामिद की दूकान की

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 3 - लेखक तक्षशिला में आग लगने की खबर सुन कर क्या प्रार्थना करने लगा?

(क (पाकिस्तान में लगी आग जल्दी बुझ जाए

(ख (तक्षशिला में लगी आग जल्दी बुझ जाए

(ग (हामिद की दूकान और हामिद सही सलामत हो

(घ (शरारती तत्वों को जल्दी से पकड़ लिया जाए

प्रश्न 4 - जब लेखक तक्षशिला के खण्डरों को देखने गया था तो लेखक किस वजह से परेशान हो गया था?

(क (भूख के कारण

(ख (कड़कड़ाती धूप के कारण

(ग (होटल न मिलने के कारण

(घ (उपरोक्त सभी

प्रश्न 5 - रेलवे स्टेशन से कुछ दूर लेखक जिस गाँव में गया वहाँ लेखक को क्या नजर आ रहा था?

(क) धुआँ और हाथ की रेखाओं की तरह फैली गलियों

(ख) गन्दगी और सड़े हुए चमड़े की बदबू

(ग) मच्छर

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 6 - लेखक के पाँव अपने आप उस दुकान की ओर क्यों मुड़ गए?

(क (भूख के कारण

(ख (चपातियों की सोंधी महक के कारण

(ग (कड़कड़ाती धूप से बचने के लिए

(घ (इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 7 - जब लेखक हामिद खाँ की दुकान के अंदर गया तो क्या हुआ?

(क) हामिद खाँ ने चपातियाँ बेलना छोड़ दिया

(ख) हामिद खाँ लेखक को घूर-घूर कर देखने लगा

(ग) हामिद खाँ को घूरता हुआ देख कर लेखक मुसकरा दिया

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 8 - लेखक के पूछने पर की खाने को कुछ मिलेगा तो हामिद खाँ ने क्या कहा?

(क) केवल चपाती है

(ख) केवल सब्जी या गोश्त का मसालेदार शोरबा है

(ग) चपाती और गोश्त या सब्जी का मसालेदार शोरबा है

(घ) लेखक दूसरे देश से आया है इसलिए उसके पास कुछ नहीं है

प्रश्न 9 - लेखक ने उस दुकान के भीतर झाँककर क्या देखा?

(क) दूकान का आँगन बिना किसी तरीके से लीपा हुआ था

(ख) दूकान की दीवारें धूल से सनी हुई थी

(ग) दूकान के एक कोने में एक खाट पड़ी हुई थी जिस पर एक दाढ़ी वाला बुड्ढा गंदे तकिए पर कोहनी टेके हुए हुक्का पी रहा था

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 10 - लेखक ने हामिद खाँ को क्या बताया कि वह कहाँ का है?

(क) पकिस्ता न का

(ख) भारत का

(ग) भारत के दक्षिणी छोर-मद्रास का

(घ) मालाबार का

प्रश्न 11 - लेखक किस धर्म का था?

(क) हिन्दू

(ख) मुस्लिम

(ग) सिक्ख

(घ) ईसाई

प्रश्न 12 - लेखक के हिन्दू होने का पता चलने पर हामिद खाँ ने लेखक से क्या पूछा?

(क (कि वह पाकिस्तान क्यों आया है

(ख (कि क्या वह हिन्दू हो के एक मुस्लिम होटल में खाना खायेगा

(ग (कि वह हिन्दू हो कर मुस्लिम होटल में क्यों आया है

(घ (कि वह हिन्दू और मुस्लिम के बारे में क्या सोचता है

प्रश्न 13 - लेखक के शहर के मुसलमानी होटल में क्या-क्या बढ़िया मिलता है?

(क (चाय

(ख (पुलाव

(ग (बिरयानी

(घ) (क (और) ख (दोनों

प्रश्न 14 - हामिद खाँ लेखक की किस बात पर विश्वास नहीं हर पाया?

(क) हिन्दू होने की बात पर

(ख) भारतीय होने की बात पर

(ग) बिना किसी की परवाह किए मुस्लीम होटल में चले जाने की बात पर

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 15 - लेखक ने हामिद खाँ को कौन सी बात गर्व के साथ बताई?

(क (बिना किसी की परवाह किए मुस्लीम होटल में चले जाते हैं

(ख (लेखक के शहर में हिंदू-मुसलमान में कोई फर्क नहीं है

*-प्रश्न- उत्तर -

प्र-१ लेखक का परिचय हामिद खाँ से किन परिस्थितियों में हुआ?

उ-१-हामिद पाकिस्तानी मुसलमान था। वह तक्षशिला के पास एक गाँव में होटल चलाता था। लेखक तक्षशिला

के खंडहर देखने के लिए पाकिस्तान आया तो हामिद के होटल पर खाना खाने पहुँचा। वहीं उनका आपस

में परिचय हुआ।

प्र-२-काश मैं आपके मुल्क में आकर यह सब अपनी आँखों से देख सकता।-'हामिद ने ऐसा क्यों कहा?

उ-२-हामिद ने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि वहाँ हिंदू-मुसलमानों को आततताइयों की औलाद समझते हैं।वहाँ सांप्रदायिक सौहार्द्र की कमी के कारण आए दिन हिंदू-मुसलमानों के बीच दंगे होते रहे हैं। इसके विपरीत भारत में हिंदू मुसलमान सौहार्द से मिल-जुलकर रहते हैं। ऐसी बातें हामिद के लिए सपने जैसी थी।

प्र-३-हामिद को लेखक की किन बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था?

उ-3-हामिद को लेखक की भेदभाव रहित बातों पर विश्वास नहीं हुआ। लेखक ने हामिद को बताया कि उनके प्रदेश में हिंदू-मुसलमान बड़े प्रेम से रहते हैं। वहाँ के हिंदू बढ़िया चाय या पुलावों का स्वाद लेने के लिए मुसलमानी होटल में ही जाते हैं। पाकिस्तान में ऐसा होना संभव नहीं था। वहाँ के हिंदू मुसलमानों को अत्याचारी मानकर उनसे घृणा करते थे। इसलिए हामिद को लेखक की बातों पर विश्वास न हो सका।

प्र-4-हामिद खाँ ने खाने का पैसा लेने से इंकार क्यों किया?

उ-4-हामिद खाँ ने खाने का पैसा लेने से इसलिए इंकार कर दिया, क्योंकि-

वह भारत से पाकिस्तान गए लेखक को अपना मेहमान मान रहा था।

हिंदू होकर भी लेखक मुसलमान के ढाबे पर खाना खाने गया था।

लेखक मुसलमानों को आततताइयों की औलाद नहीं मानता था।

लेखक की सौहार्द भरी बातों से हामिद खाँ बहुत प्रभावित था।

लेखक की मेहमाननवाजी करके हामिद 'अतिथि देवो भव' की परंपरा का निर्वाह करना चाहता था।

प्र-5-मालाबार में हिंदू-मुसलमानों के परस्पर संबंधों को अपने शब्दों में लिखिए।

उ-5-मालाबार में हिंदू-मुसलमानों के आपसी संबंध बहुत घनिष्ठ हैं। हिंदूजन मुसलमानों के होटलों में खूब खान-पान करते हैं। वे आपस में मिल जुलकर रहते हैं। भारत में मुसलमानों द्वारा बनाई गई पहली मसजिद उन्हीं के राज्य में है। फिर भी वहाँ सांप्रदायिक दंगे बहुत कम होते हैं।

प्र-6-तक्षशिला में आगजनी की खबर पढ़कर लेखक के मन में कौन-सा विचार कौंधा? इससे लेखक के स्वभाव की किस विशेषता का परिचय मिलता है?

उ-6-तक्षशिला में आगजनी की खबर सुनकर लेखक के मन में हामिद खाँ और उसकी दुकान के आगजनी से प्रभावित होने का विचार कौंधा। वह सोच रहा था कि कहीं हामिद की दुकान इस आगजनी का शिकार न हो गई हो। वह हामिद की सलामती की प्रार्थना करने लगा। इससे लेखक के कृतज्ञ होने, हिंदू-मुसलमानों को समान समझने की मानवीय भावना रखने वाले स्वभाव का पता चलता है।

*-प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

1-लेखक का परिचय हामिद खाँ से किन परिस्थितियों में हुआ?

1-एक बार गर्मियों में लेखक तक्षशिला के खंडहर देखने गया था। गर्मी के कारण लेखक का भूख प्यास से बुरा हाल था। खाने की तलाश में वह रेलवे स्टेशन से आगे बसे गाँव की ओर चला गया। वहाँ तंग और गंदी गलियों से भरा बाज़ार था, वहाँ पर खाने पीने का कोई होटल या दुकान नहीं दिखाई दे रही थी और लेखक भूख प्यास से परेशान था। तभी एक दुकान पर रोटियाँ सेंकी जा रही थीं जिसकी खुशबू से लेखक की भूख और बढ़ गई। वह दुकान में चला गया और खाने के लिए माँगा। वहीं हामिद खाँ से परिचय हुआ। हामिद खाँ से बातचीत के समय एक दूसरे की भावना का पता चला और प्रेम से वशीभूत होकर एक दूसरे के अच्छे मित्र बन गए।

2-काश मैं आपके मुल्क में आकर यह सब अपनी आँखों से देख सकता। 'हामिद ने ऐसा क्यों कहा?

2-हामिद खाँ को पता चला कि लेखक हिंदू है तो हामिद ने पूछा –क्या वह मुसलमानी होटल में खाएँगे। तब लेखक ने बताया कि हिंदुस्तान में हिंदू–मुसलमान में कोई भेद नहीं होता है। अच्छा पुलाव खाने के लिए वे मुसलमानी होटल में ही जाते हैं। पहला मस्जिद कोडुंगल्लूर हिंदुस्तान में ही बना। वहाँ हिंदू–मुसलमानों के बीच दंगे नहीं होते। सब बराबर हैं। हामिद को एकदम विश्वास नहीं हुआ लेकिन लेखक के कहने में उसे सच्चाई नज़र आई। वह ऐसी जगह को स्वयं देखकर तसल्ली करना चाहता था।

3-हामिद खाँ ने खाने का पैसा लेने से इंकार क्यों किया?

3-हामिद खाँ को गर्व था कि एक हिंदू ने उनके होटल में खाना खाया। साथ ही वह लेखक को मेहमान भी मान रहा था। वह आने वाले के शहर की हिंदू–मुस्लिम एकता का भी कायल हो गया था। इसलिए हामिद खाँ ने खाने के पैसे नहीं लिए।

4-सांप्रदायिक दंगों की खबर पढ़कर लेखक कौन-सी प्रार्थना करने लगा?

4-सांप्रदायिक दंगों की खबर पढ़कर लेखक को हामिद और उसकी दुकान की याद हो आई। वह ईश्वर से प्रार्थना करने लगा, "हे भगवान! मेरे हामिद खाँ की दुकान को इस आगजनी से बचा लेना।

5-हामिद खाँ की दुकान का चित्रण कीजिए।

5-हामिद खाँ की दुकान तक्षशिला रेलवे स्टेशन से पौन मील दूरी पर एक गाँव के तंग बाज़ार में थी। उसकी दुकान का आँगन बेतरतीबी से लीपा था तथा दीवारें धूल से सनी थीं। अंदर चारपाई पर हामिद के अब्बा हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। दुकान में ग्राहकों के लिए कुछ बेंच भी पड़े थे।

6-लेखक को हामिद की याद बनी रहे, इसके लिए उसने क्या तरीका अपनाया?

6-भारत जाने पर भी लेखक को हामिद की याद आए, इसके लिए उसने लेखक को भोजन के बदले दिया गया रुपया वापस करते हुए कहा, 'मैं चाहता हूँ कि यह आपके ही हाथों में रहे। जब आप पहुँचे तो किसी मुसलमानी होटल में जाकर इसे पैसे से पुलाव खाएँ और तक्षशिला के भाई हामिद खाँ को याद करें।

7-'तक्षशिला और मालाबार के लोगों में सांप्रदायिक सद्भाव में क्या अंतर है'? हामिद खाँ पाठ के आधार पर लिखिए।
7-तक्षशिला के लोगों में सांप्रदायिकता का बोलबाला था। वहाँ हिंदू और मुसलमान परस्पर शक की निगाह से देखते हैं और एक-दूसरे को मारने-काटने के लिए दंगे और आगजनी करते हैं। इसके विपरीत मालाबार में हिंदू-मुसलमानों में सांप्रदायिक सद्भाव है। वे मिल-जुलकर रहते हैं। यहाँ नहीं के बराबर दंगे होते हैं।

8-हामिद के भारत आने पर आप उसके साथ कैसा व्यवहार करते?
8-हामिद के भारत आने पर मैं उसका गर्मजोशी से स्वागत करता। उससे तक्षशिला के सांप्रदायिक वातावरण में आए बदलावों के बारे में पूछता, उसकी दुकान के बारे में पूछता। मैं हामिद को मालाबार के अलावा भारत के अन्य शहरों में ले जाता और हिंदू-मुस्लिम एकता के दर्शन कराता। मैं उसे अपने साथ हिंदू होटलों के अलावा मुस्लिम होटलों में भी खाना खिलाता। उसे हिंदू-मुसलमान दोनों धर्मों के लोगों से मिलवाता ताकि वह यहाँ के सांप्रदायिकता सौहार्द को स्वयं महसूस कर सके। मैं उसके साथ 'अतिथि देवो भव' परंपरा का पूर्ण निर्वाह करना।

9-हमें अपनी जान बचाने के लिए लड़ना पड़ता है, यही हमारी नियति है। ऐसा किसने और क्यों कहा? उसके इस कथन का लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा?
9-लेखक तक्षशिला की एक सँकरी गली में खाने के लिए कोई ढाबा ढूँढ़ रहा था कि एक दुकान से चपातियों की सोधी खुशबू आती महसूस हुई। वह दुकान के अंदर चला गया। बातचीत में चपातियाँ सेंकने वाले हामिद ने पूछा, क्या आप हिंदू हैं? लेखक के हाँ कहने पर उसने पूछा आप हिंदू होकर भी मुसलमान के ढाबे पर खाना खाने आए हैं, तो लेखक ने अपने देश हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिक सद्भाव के बारे में उसे बताया जबकि तक्षशिला में स्थिति ठीक विपरीत थी। वहाँ हामिद जैसों को आतताइयों की औलाद माना जाता था। उन पर हमले किए-कराए जाते थे, इसलिए उसने कहा कि हमें अपनी जान बचाने के लिए लड़ना पड़ता है। उसके इस कथन से लेखक दुखी हुआ।

10-हामिद कौन था? उसे लेखक की किन बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था?
10-हामिद तक्षशिला की सँकरी गलियों में ढाबा चलाने वाला अधेड़ उम्र का पठान था। वह अत्यंत संवेदनशील और विनम्र व्यक्ति था। तक्षशिला में उस जैसों को सांप्रदायिकता का शिकार होना पड़ता था। इससे बचने के लिए उसे आतताइयों से लड़ना-झगड़ना पड़ता था। लेखक ने जब उसे बताया कि उसके यहाँ (मालाबार में) अच्छी चाय पीने और स्वादिष्ट बिरयानी खाने के लिए हिंदू भी मुसलमानों के ढाबे पर जाते हैं तथा हिंदू और मुसलमान परस्पर मिल-जुलकर रहते हैं। इसके अलावा भारत में पहली मस्जिद का निर्माण मुसलमानों ने उसके राज्य के एक स्थान कोंडुगल्लूर में किया था तथा उसके यहाँ हिंदू-मुसलमानों के बीच दंगे नहीं के बराबर होते हैं, तो यह सब सुनकर हामिद को विश्वास नहीं हो रहा था।

पाठ- 14-अग्निपथ
कवि - हरिवंशराय बच्चन

कवि परिचय
कवि - हरिवंशराय बच्चन
जन्म - 1907

प्रस्तुत कविता में कवि ने संघर्ष से भरे जीवन को 'अग्नि पथ 'कहते हुए मनुष्य को यह संदेश दिया है कि जीवन में जब कभी भी कठिन समय आता है तो यह समझ लेना चाहिए कि यही कठिन समय तुम्हारी असली परीक्षा है। यदि मनुष्य को जीवन में सफल होना है तो कभी भी किसी भी कठिन समय में किसी की मदद नहीं लेनी चाहिए। मनुष्य को एक प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि चाहे मंजिल तक पहुँचने के रास्ते में कितनी भी मुश्किलें क्यों न आए मनुष्य कभी भी मेहनत करने से थकेगा नहीं, कभी रुकेगा नहीं और ना ही कभी पीछे मुड़ कर देखेगा। जब कोई मनुष्य किसी कठिन रास्ते से होते हुए अपनी मंजिल की ओर आगे बढ़ता है तो उसका वह संघर्ष दूसरों के लिए प्रेरणा दायक होता है। कवि कहता है कि अपनी मंजिल पर वही मनुष्य पहुँच पाते हैं जो कड़ी मेहनत कर के आगे बढ़ते हैं।

अग्निपथ पाठ व्याख्या

अग्नि पथ! अग्नि पथ! अग्नि पथ!
वृक्ष हों भले खड़े,
हों घने, हों बड़े,
एक पत्र छाँह भी माँग मत, माँग मत, माँग मत!
अग्नि पथ! अग्नि पथ! अग्नि पथ!

शब्दार्थ -
अग्नि पथ - कठिनाइयों से भरा हुआ मार्ग, आगयुक्त मार्ग
पत्र - पत्ता
छाँह - छाया

व्याख्या - कवि मनुष्यों को सन्देश देता है कि जीवन में जब कभी भी कठिन समय आता है तो यह समझ लेना चाहिए कि यही कठिन समय तुम्हारी असली परीक्षा का है। ऐसे समय में हो सकता है कि तुम्हारी मदद के लिए कई हाथ आगे आएँ, जो हर तरह से तुम्हारी मदद के लिए सक्षम हो लेकिन हमेशा यह याद रखना चाहिए कि यदि तुम्हे जीवन में सफल होना है तो कभी भी किसी भी कठिन समय में किसी की मदद नहीं लेनी चाहिए। स्वयं ही अपने रास्ते पर कड़ी मेहनत साथ बढ़ते रहना चाहिए।

तू न थकेगा कभी!
तू न थमेगा कभी!
तू न मुड़ेगा कभी! कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ!
अग्नि पथ! अग्नि पथ! अग्नि पथ!

शब्दार्थ -

शपथ - कसम, सौगंध

व्याख्या - कवि मनुष्यों को समझाते हुए कहता है कि जब जीवन सफल होने के लिए कठिन रास्ते पर चलने का फैसला कर लो तो मनुष्य को एक प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि चाहे मंजिल तक पहुँचाने के रास्ते में कितनी भी मुश्किलें क्यों न आए मनुष्य को कभी भी मेहनत करने से थकेगा नहीं, कभी रुकेगा नहीं और ना ही कभी पीछे मुड़ कर देखेगा।

यह महान दृश्य है
चल रहा मनुष्य है
अश्रु-स्वेद-रक्त से लथपथ, लथपथ, लथपथ
अग्नि पथ! अग्नि पथ! अग्नि पथ!

शब्दार्थ -

अश्रु - आँसू

स्वेद - पसीना

रक्त - खून, शोणित

लथपथ - सना हुआ

व्याख्या - कवि मनुष्यों को सन्देश देते हुए कहता है कि जब कोई मनुष्य किसी कठिन रास्ते से होते हुए अपनी मंजिल की ओर आगे बढ़ता है तो उसका वह संघर्ष देखने योग्य होता है अर्थात दूसरों के लिए प्रेरणा दायक होता है। कवि कहता है कि अपनी मंजिल पर वही मनुष्य पहुँच पाते हैं जो आँसू, पसीने और खून से सने हुए अर्थात कड़ी मेहनत कर के आगे बढ़ते हैं।

*-बहुवैल्क्पिक प्रश्नोत्तर -

प्रश्न 1 - कवि के अनुसार मनुष्य की असली परीक्षा कब होती है?

(A) कठिन समय में

(B) परीक्षा भवन में

(C) जीवन के अंत में

(D) इनमें से कोई नही

प्रश्न 2 - कवि के अनुसार मनुष्य के कठिन समय में यदि कोई मदद का हाथ बढ़ाता है तो उसे क्या करना चाहिए?

(A) कठिन समय में मदद ले लेनी चाहिए

(B) कठिन समय में किसी की मदद नहीं लेनी चाहिए

(C) उसका हाथ थाम लेना चाहिए

(D) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 3 - कवि के अनुसार जीवन में कौन सफल होता है?

(A) कठिन समय में मदद लेने वाला

(B) कठिन समय में हार मानने वाला

(C) जीवन के हर मोड़ पर दूसरों पर निर्भर रहने वाला
(D) हमेशा मेहनत करने वाला

प्रश्न 4 - कवि के अनुसार कठिन रास्ते पर चलने का फैसला करने वाले मनुष्य को क्या प्रतिज्ञा करनी चाहिए?
(A) वह कभी थकेगा नहीं
(B) वह कभी रुकेगा नहीं
(C) वह कभी पीछे मुड़ कर देखेगा
(D) उपरोक्त सभी

प्रश्न 5 - कवि के अनुसार कौन सा मनुष्य अपनी मंजिल को हासिल कर लेता है?
(A) कठिन समय में हार मानने वाला
(B) जीवन में हमेशा दूसरों पर निर्भर रहने वाला
(C) जीवन के अंत में हार मानने वाला
(D) किसी भी परिस्थिति में हार न मानने वाला

प्रश्न 6 - कवि के अनुसार किसका संघर्ष दूसरों के लिए प्रेरणा दायक होता है?
(A) कठिन समय में हार मानने वाले का
(B) जीवन में हमेशा दूसरों पर निर्भर रहने वाले का
(C) जीवन के अंत में हार मानने वाले का
(D) किसी भी परिस्थिति में हार न मानने वाले का

प्रश्न 7 - कवि के अनुसार कौन से मनुष्य अंत में अपनी मंजिल को हासिल कर लेते है?
(A) खून-पसीने से लथपथ हो कर आगे बढ़ने वाले
(B) किसी से मदद लेने वाले
(C) जीवन के अंत में हार मानने वाले
(D) इनमें से कोई नहीं
प्रश्न 8 - कवि के अनुसार 'अग्नि-पथ' अर्थ है?
(A) जिस रास्ते पर आग लगी हो
(B) संघर्ष पूर्ण जीवन
(C) आग से सना हुआ रास्ता
(D) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 9 - कवि के अनुसार महान दृश्य क्या है?
(A) कठिन समय में भी आगे बढ़ते हुए मनुष्यों को देखना
(B) महान व्यक्तियों के दर्शन करना
(C) जीवन के अंत में हार मानाने वालों को देखना

(D) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 10 - कवि ने कविता में वृक्ष शब्द किसके लिए प्रयोग किया है?
(A) स्वार्थी मनुष्यों को
(B) आलसी मनुष्यों को
(C) कठिन समय में मदद करने वालों को
(D) इनमें से कोई नहीं

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1 - कवि ने 'अग्नि पथ' किसके प्रतीक स्वरूप प्रयोग किया है?
उत्तर - जीवन में जब कठिनाई का दौर चलता है तभी किसी की असली परीक्षा होती है। ऐसे ही दौर को कवि ने अग्नि पथ के रूप में देखा है।

प्रश्न 2 - 'माँग मत, 'कर शपथ, 'लथपथ' इन शब्दों का बार-बार प्रयोग कर कवि क्या कहना चाहता है?
उत्तर - 'माँग मत, 'कर शपथ, 'लथपथ' इन शब्दों का बार बार प्रयोग करके कवि कई ऐसी भावनाओं को उजागर करता है जो मंजिल को हासिल करने के लिए जरूरी होती हैं। दृढ़ इच्छाशक्ति और लाख गिरने के बावजूद किसी से मदद की गुहार न करना ही ऐसे समय में सफलता की कुंजी होती है।

प्रश्न 3 - 'एक पत्र छाँह भी माँग मत' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर - हो सकता है कि कठिन दौर में आपकी मदद के लिए कई लोग आगे आएँ। जो हर तरह से आपकी मदद के लिए सक्षम हो लेकिन हमेशा यह याद रखना चाहिए कि यदि आपको जीवन में सफल होना है तो कभी भी किसी भी कठिन समय में किसी की मदद नहीं लेनी चाहिए। स्वयं ही अपने रास्ते पर कड़ी मेहनत साथ बढ़ते रहना चाहिए।
*-निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए -
प्रश्न 1 - तू न थमेगा कभी, तू न मुड़ेगा कभी
उत्तर - जब कठिन रास्ते पर चलना हो तो मनुष्य को एक प्रतिज्ञा करनी चाहिए। वह कभी नहीं थकेगा, कभी नहीं रुकेगा और कभी पीछे नहीं मुड़ेगा।

प्रश्न 2 - चल रहा मनुष्य है, अश्रु, स्वेद, रक्त से लथपथ, लथपथ, लथपथ
उत्तर - जब कोई किसी कठिन रास्ते से होते हुए अपनी मंजिल की ओर आगे बढ़ता है तो उसका वह संघर्ष देखने योग्य होता है अर्थात दूसरों के लिए प्रेरणा दायक होता है। वही मनुष्य मंजिल पर पहुँच पाते हैं जो आँसू, पसीने और खून से सने हुए अर्थात कड़ी मेहनत कर के आगे बढ़ते हैं।

प्रश्न 3 - इस कविता का मूलभाव क्या है? स्पष्ट कीजिए।
त्तर - इस कविता का मूलभाव यह है की जब कठिन दौर आता है तभी मनुष्य की असली परीक्षा होती है। ऐसे में उसे किसी से मदद नहीं माँगनी चाहिए। ऐसे समय में उसे न तो थकना चाहिए, न

ही रुकना चाहिए और न ही पीछे मुड़ना चाहिए। इस प्रयास में हो सकता है कि मनुष्य अपने खून-पसीने से नहा जाए लेकिन उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति ही उसको उसकी मंजिल तक पहुँचा सकती है।

पाठ-15-नए इलाके में और खुश्बू रचे हाथ
कवि - अरुण कमल

*-कवि परिचय नए इलाके में और खुश्बू रचे हाथ
कवि - अरुण कमल
जन्म - 1954
नए इलाके में, खुशबू रचते हैं हाथ पाठ प्रवेश
प्रस्तुत पाठ की पहली कविता 'नए इलाके में' में कवि ने एक ऐसी दुनिया में प्रवेश करने के आमंत्राण का उल्लेख किया है, जो एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है। इस कविता के आधार पर कवि इस बात का ज्ञान देना चाहता है कि जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं होता अर्थात कोई भी वस्तु या जीव हमेशा के लिए नहीं रहते। इस पल-पल बनती और बिगड़ती दुनिया में किसी की भी यादों के भरोसे नहीं जिया जा सकता।
इस पाठ की दूसरी कविता 'खुशबू रचते हैं हाथ' में कवि ने सामाजिक विषमताओं को बेनकाब किया है। इस कविता में कवि ने गरीबों के जीवन पर प्रकाश डाला है। कवि कहता है कि यह किसकी और कैसी कारस्तानी है कि जो वर्ग समाज को सुंदर बनाने में लगा हुआ है और उसे खुशहाल बना रहा है, वही वर्ग अभाव में, गंदगी में जीवन बिता कर रहा है? लोगों के जीवन में सुगंध बिखेरने वाले हाथ बहुत ही भयानक स्थितियों में अपना जीवन बिताने पर मजबूर हैं! क्या विडंबना है कि खुशबू रचने वाले ये हाथ दूरदराज़ के सबसे गंदे और बदबूदार इलाकों में जीवन बिता रहे हैं। स्वस्थ समाज के निर्माण में योगदान करने वाले ये लोग इतने उपेक्षित हैं! कवि यहाँ प्रश्न कर रहा है कि आखिर कब तक ऐसा चलने वाला है?
पाठ सार
प्रस्तुत पाठ की पहली कविता 'नए इलाके में' में कवि ने एक ऐसी दुनिया में प्रवेश करने के आमंत्राण का उल्लेख किया है, जो एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है। इस कविता के आधार पर कवि इस बात का ज्ञान देना चाहता है कि जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं होता अर्थात कोई भी वस्तु या जीव हमेशा के लिए नहीं रहते।
कवि के साथ अक्सर ऐसा होता है कि वह अपना रास्ता ढूँढ़ने के लिए पीपल के पेड़ को खोजता है परन्तु हर जगह मकानों के बनने के कारण उस पीपल के पेड़ को काट दिया गया है। फिर कवि पुराने गिरे हुए मकान को ढूँढ़ता है परन्तु वह भी उसे अब कही नहीं दिखता। कहने का तात्पर्य

यह है कि कवि को अब बहुत से मकानों के बन जाने से घर का रास्ता ढूँढ़ने में परेशानियों का सामना करना पड़ता है। कवि कहता है जहाँ पर रोज ही कुछ नया बन रहा हो और कुछ मिटाया जा रहा हो, वहाँ पर अपने घर का रास्ता ढूँढ़ने के लिए आप अपनी याददाश्त पर भरोसा नहीं कर सकते। कवि कहता है कि एक ही दिन में सबकुछ इतना बदल जाता है कि एक दिन पहले की दुनिया पुरानी लगने लगती है। ऐसा लगता है जैसे महीनों बाद लौटा हूँ। कवि कहता है कि अब सही घर ढूँढ़ने का एक ही उपाय है कि हर दरवाजे को खटखटा कर पूछो कि क्या वह सही घर है। इस पाठ की दूसरी कविता 'खुशबू रचते हैं हाथ' में कवि ने सामाजिक विषमताओं को बेनकाब किया है। इस कविता में कवि ने गरीबों के जीवन पर प्रकाश डाला है। कवि कहता है कि अगरबत्ती का इस्तेमाल लगभग हर व्यक्ति करता है। इस कविता में कवि ने उन खुशबूदार अगरबत्ती बनाने वालों के बारे में बताया है जो खुशबू से कोसों दूर है।

ऐसा कवि ने इसलिए कहा है क्योंकि अगरबत्ती का कारखाना अकसर किसी तंग गली में, घरों और सड़कों के किनारे गंदे पानी के बहाव के लिए बनाए गए रास्ता के पार और बदबूदार कूड़े के ढेर के समीप होता है। कवि कहता है कि अगरबत्ती बनाने वाले कारीगरों के हाथ तरह-तरह के होते हैं। किसी के हाथों में उभरी हुई नसें होती हैं। किसी के हाथों के नाखून घिसे हुए होते हैं। कुछ कारीगरों के हाथ गंदे, कटे-पिटे और चोट के कारण फटे हुए भी होते हैं। कवि कहता है कि दूसरों के लिए खुशबू बनाने वाले खुद न जाने कितनी और कैसी तकलीफों का सामना करते हैं। कवि कहता है कि यह एक विडंबना ही है कि दुनिया की सारी खुशबू उन गलियों में बनती है जहाँ दुनिया भर की गंदगी समाई होती है।

नए इलाके में, खुशबू रचते हैं हाथ पाठ व्याख्या

इन नए बसते इलाकों में
जहाँ रोज बन रहे हैं नए-नए मकान
मैं अकसर रास्ता भूल जाता हूँ

शब्दार्थ -

इलाका - क्षेत्र
अकसर - प्रायः, हमेशा

व्याख्या - कवि कहता है कि शहर में नये मुहल्ले रोज ही बसते हैं। ऐसी जगहों पर रोज नये-नये मकान बनते हैं। रोज-रोज नये बनते मकानों के कारण कोई भी व्यक्ति ऐसे इलाके में रास्ता भूल सकता है। कवि को भी यही परेशानी होती है। वह भी इन मकानों के बीच अपना रास्ता हमेशा भूल जाता है।

धोखा दे जाते हैं पुराने निशान
खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़
खोजता हूँ ढ़हा हुआ घर
और जमीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बाएँ
मुड़ना था मुझे
फिर दो मकान बाद बिना रंगवाले लोहे के फाटक का
घर था इकमंजिला

शब्दार्थ -

ताकता - देखता

ढहा - गिरा हुआ, ध्वस्त

फाटक - दरवाजा

व्याख्या - कवि कहता है कि जो पुराने निशान हैं वे धोखा दे जाते हैं क्योंकि कुछ पुराने निशान तो सदा के लिए मिट जाते हैं। कवि के साथ अक्सर ऐसा होता है कि वह अपना रास्ता ढूँढ़ने के लिए पीपल के पेड़ को खोजता है परन्तु हर जगह मकानों के बनने के कारण उस पीपल के पेड़ को काट दिया गया है।

फिर कवि पुराने गिरे हुए मकान को ढूँढ़ता है परन्तु वह भी उसे अब कही नहीं दिखता। कवि कहता है कि पहले तो उसे घर का रास्ता ढूँढ़ने के लिए जमीन के खाली टुकड़े के पास से बाएँ मुड़ना पड़ता था और उसके बाद दो मकान के बाद बिना रंगवाले लोहे के दरवाजे वाले इकमंजिले मकान में जाना होता था। कहने का तात्पर्य यह है कि कवि को अब बहुत से मकानों के बन जाने से घर का रास्ता ढूँढ़ने में परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

और मैं हर बार एक घर पीछे
चल देता हूँ
या दो घर आगे ठकमकाता
यहाँ रोज कुछ बन रहा है
रोज कुछ घट रहा है
यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं

शब्दार्थ -

ठकमकाता - धीरे-धीरे, डगमगाते हुए

स्मृति - याद

व्याख्या - कवि कहता है कि अपने घर जाते हुए वह हर बार या तो अपने घर से एक घर पीछे ठहर जाता है या डगमगाते हुए अपने घर से दो घर आगे ही बढ़ जाता है। कवि कहता है जहाँ पर रोज ही कुछ नया बन रहा हो और कुछ मिटाया जा रहा हो, वहाँ पर अपने घर का रास्ता ढूँढ़ने के लिए आप अपनी याददाश्त पर भरोसा नहीं कर सकते।

एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
जैसे वसंत का गया पतझड़ को लौटा हूँ
जैसे बैसाख का गया भादों को लौटा हूँ
अब यही है उपाय कि हर दरवाजा खटखटाओ
और पूछो - क्या यही है वो घर?
समय बहुत कम है तुम्हारे पास
आ चला पानी ढ़हा आ रहा अकास
शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देखकर

शब्दार्थ -
वसंत - छह ऋतुओं में से एक
पतझड़ - एक ऋतु जब पेड़ों के पत्ते झड़ते हैं
वैसाख (वैशाख) - चैत (चैत्र) के बाद आने वाला महीना
भादों - सावन के बाद आने वाला महीना
अकास (आकाश) - गगन
व्याख्या - कवि कहता है कि एक ही दिन में सबकुछ इतना बदल जाता है कि एक दिन पहले की दुनिया पुरानी लगने लगती है। ऐसा लगता है जैसे महीनों बाद लौटा हूँ। ऐसा लगता है जैसे घर से बसंत ऋतु में बाहर गया था और पतझड़ ऋतु में लौट कर आया हूँ।
जैसे बैसाख ऋतु में गया और भादों में लौटा हो। कवि कहता है कि अब सही घर ढूँढ़ने का एक ही उपाय है कि हर दरवाजे को खटखटा कर पूछो कि क्या वह सही घर है। कवि कहता है कि उसके पास अपना घर ढूँढ़ने लिए बहुत कम समय है क्योंकि अब तो आसमान से बारिश भी आने वाली है और कवि को उम्मीद है कि कोई परिचित उसे देख लेगा और आवाज लगाकर उसे उसके घर ले जाएगा।
पाठ व्याख्या - (खुशबू रचते हैं हाथ)
नई गलियों के बीच
कई नालों के पार
कूड़े करकट
के ढ़ेरों के बाद
बदबू से फटते जाते इस
टोले के अंदर
खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ!
शब्दार्थ-
नालों - घरों और सड़कों के किनारे गंदे पानी के बहाव के लिए बनाया गया रास्ता
कूड़ा-करकट - रद्दी, कचरा
टोले - छोटी बस्त
व्याख्या - कवि कहता है कि अगरबत्ती का इस्तेमाल लगभग हर व्यक्ति करता है। अगरबत्ती हालाँकि पूजा पाठ में इस्तेमाल होती है लेकिन इसकी खुशबू ही शायद वह वजह होती है कि लोग इसे प्रतिदिन इस्तेमाल करते हैं।
इस कविता में कवि ने उन खुशबूदार अगरबत्ती बनाने वालों के बारे में बताया है जो खुशबू से कोसों दूर है। ऐसा कवि ने इसलिए कहा है क्योंकि अगरबत्ती का कारखाना अकसर किसी तंग गली में, घरों और सड़कों के किनारे गंदे पानी के बहाव के लिए बनाए गए रास्ता के पार और बदबूदार कूड़े के ढेर के समीप होता है। ऐसे स्थानों पर कई कारीगर अपने हाथों से अगरबत्ती को बनाते हैं।
उभरी नसोंवाले हाथ
घिसे नाखूनोंवाले हाथ

पीपल के पत्ते से नए नए हाथ
जूही की डाल से खुशबूदार हाथ
गंदे कटे पिटे हाथ
जख्म से फटे हुए हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ!
शब्दार्थ -
शख्म - घाव, चोट
व्याख्या - कवि कहता है कि अगरबत्ती बनाने वाले कारीगरों के हाथ तरह-तरह के होते हैं। किसी के हाथों में उभरी हुई नसें होती हैं। किसी के हाथों के नाखून घिसे हुए होते हैं। कुछ बच्चे भी काम करते हैं जिनके हाथ पीपल के नये पत्तों की तरह कोमल होते हैं। कुछ कम उम्र की लड़कियाँ भी होती हैं जिनके हाथ जूही के फूल की डाल की तरह खुशबूदार होते हैं। कुछ कारीगरों के हाथ गंदे, कटे-पिटे और चोट के कारण फटे हुए भी होते हैं। कवि कहता है कि दूसरों के लिए खुशबू बनाने वाले खुद न जाने कितनी और कैसी तकलीफों का सामना करते हैं।
यहीं इस गली में बनती हैं
मुल्क की मशहूर अगरबत्तियाँ
इन्हीं गंदे मुहल्लों के गंदे लोग
बनाते हैं केवड़ा गुलाब खस और रातरानी अगरबत्तियाँ
दुनिया की सारी गंदगी के बीच
दुनिया की सारी खुशबू
रचते रहते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ।
शब्दार्थ -
मुल्क - देश
केवड़ा - एक छोटा वृक्ष जिसके फूल अपनी सुगंध के लिए प्रसिद्ध हैं
खस - पोस्ता
रातरानी - एक सुगंधित फूल
मशहूर - प्रसिद्ध

व्याख्या - कवि कहता है कि इसी तंग गली में पूरे देश की प्रसिद्ध अगरबत्तियाँ बनती हैं। उस गंदे मुहल्ले के गंदे लोग (गरीब लोग) ही केवड़ा, गुलाब, खस और रातरानी की खुशबू वाली अगरबत्तियाँ बनाते हैं। यह एक विडंबना ही है कि दुनिया की सारी खुशबू उन गलियों में बनती है जहाँ दुनिया भर की गंदगी समाई होती है|

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर -

प्रश्न 1 - कवि के अनुसार शहर में हर दिन क्या होता है?

(A) शोर-शराबा

(B) मकानों का निर्माण

(C) त्यौहार

(D) इनमें से कुछ नहीं

प्रश्न 2 - रोज-रोज नये बनते मकानों के कारण क्या होता है?

(A) शोर-शराबा

(B) भीड़

(C) त्यौहार

(D) कोई भी व्यक्ति रास्ता भूल सकता है

प्रश्न 3 - पुराने निशानों के मिट जाने से कवि को क्या परेशानी होती है?

(A) यह उन्हें याद करता है

(B) पुराने निशान पुरानी यादों को ताज़ा करते हैं

(C) निशानों के मिट जाने से रास्ता खोजना मुश्किल है

(D) इनमें से कुछ नहीं

प्रश्न 4 - अपना रास्ता ढूँढ़ने के लिए कवि किसका सहारा लेता था?

(A) पीपल के पेड़ का

(B) पुराने गिरे हुए मकान का

(C) जमीन के खाली टुकड़े का

(D) उपरोक्त सभी

प्रश्न 5 - कवि के अनुसार रास्ता ढूँढ़ने के लिए आप अपनी याददाश्त पर भरोसा क्यों नहीं कर सकते?

(A) शोर-शराबे के कारण

(B) यादाश्त कमजोर होने के

(C) अधिक मकानों के बन जाने के कारण

(D) इनमें से कुछ नहीं

प्रश्न 6 - एक ही दिन में सबकुछ इतना कैसे बदल जाता है?

(A) शोर-शराबे के कारण

(B) हर दिन नए मकानों के निर्माण के कारण

(C) पेड़ों को काटने के कारण

(D) इनमें से कुछ नहीं

प्रश्न 7 - कवि के अनुसार सही घर ढूंढ़ने का क्या उपाय है?

(A) हर दरवाजे को खटखटा कर पूछना

(B) हर इंसान से पूछना

(C) किसी परिचत का इंतज़ार करना

(D) इनमें से कुछ नहीं

प्रश्न 8 - कवि को अंत में क्या उम्मीद है?

(A) शोर-शराबा कम होने का

(B) मकानों का निर्माण कम होने का

(C) अपना घर मिल जाने का

(D) किसी परिचत के आने का

प्रश्न 9 - कविता में कौन-कौन से पुराने निशानों का उल्लेख किया गया है?

(A) पीपल का पेड़

(B) ढ़हा हुआ मकान

(C) लोहे का बिना रंगवाला गेट

(D) उपरोक्त सभी

प्रश्न 10 - 'वसंत का गया पतझड़' और 'बैसाख का गया भादों को लौटा' से क्या अभिप्राय है?

(A) महीनों बाद लौटने से

(B) महीनों के बीतने से

(C) नया महीना आने से

(D) इनमें से कुछ नहीं

प्रश्न 11 - कवि का 'खुशबू रचते हैं हाथ' से क्या अभिप्राय है?

(A) अगरबत्ती बनाने वाले हाथों से

(B) गुलदस्ता बनाने वालों से

(C) इत्र बनाने वालों से

(D) इनमें से कुछ नहीं

प्रश्न 12 - अगरबत्ती का कारखाना अकसर कहाँ होता है?

(A) किसी तंग गली में

(B) घरों और सड़कों के किनारे गंदे पानी के बहाव के लिए बनाए गए रास्ता के पार

(C) बदबूदार कूड़े के ढेर के समीप

(D) उपरोक्त सभी

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

प्रश्न 1 - नए बसते इलाके में कवि रास्ता क्यों भूल जाता है?

उत्तर - नये बसते इलाके में रोज रोज नये-नये मकान बनते हैं। कवि के साथ अक्सर ऐसा होता है कि वह अपना रास्ता ढूँढ़ने के लिए पीपल के पेड़ को खोजता है परन्तु हर जगह मकानों के बनने के कारण उस पीपल के पेड़ को काट दिया गया है। इससे आसपास का नजारा बदल जाता है और पुराने निशान गायब हो जाते हैं। इसलिए कवि रास्ता भूल जाता है।

प्रश्न 2 - कविता में कौन-कौन से पुराने निशानों का उल्लेख किया गया है?
उत्तर - पीपल का पेड़, ढ़हा हुआ मकान, लोहे का बिना रंगवाला गेट

प्रश्न 3 - कवि एक घर पीछे या दो घर आगे क्यों चल देता है?
उत्तर - कवि हर दिन नए-नए घर बन जाने से अपने घर को नहीं ढूँढ़ पाता है और इसलिए एक घर पीछे या दो घर आगे चल देता है।

प्रश्न 4 - 'वसंत का गया पतझड़' और 'बैसाख का गया भादों को लौटा' से क्या अभिप्राय है?
उत्तर - 'वसंत का गया पतझड़' और 'बैसाख का गया भादों को लौटा' से अभिप्राय महीनों बाद लौटने से है।

प्रश्न 5 - कवि ने इस कविता में 'समय की कमी' की ओर क्यों इशारा किया है?
उत्तर - जल्दी से सही पता न मिलने पर हो सकता है कि कवि की परेशानियाँ बढ़ जाएँ। हो सकता है उसे बिना वजह किसी होटल में किराये पर कमरा लेना पड़े, या प्लेटफॉर्म पर रात बितानी पड़े। हो सकता है कि कवी के घर में कोई महत्वपूर्ण काम चल रहा हो। इसलिए कवि ने इस कविता में 'समय की कमी' की ओर इशारा किया है। ।

प्रश्न 6 - इस कविता में कवि ने शहरों की किस विडंबना की ओर संकेत किया है?
उत्तर - इस कविता में कवि ने शहरों के लगातार बदलते स्वरूप की ओर संकेत किया है। शहर में कुछ भी स्थाई नहीं होता। सब कुछ इतनी तेजी से बदलता है कि लोग हक्के बक्के रह जाते हैं और अपने घर का रास्ता भी भूल जाते हैं।

*-व्याख्या कीजिए -

प्रश्न 1 - यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं, एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
उत्तर - एक ही दिन में सबकुछ इतना बदल जाता है कि एक दिन पहले की दुनिया पुरानी लगने लगती है। ऐसे में कोई पता ढूँढ़ने के लिए याददाश्त पर भरोसा करने से कोई लाभ नहीं होता।

प्रश्न 2 - समय बहुत कम है तुम्हारे पास, आ चला पानी ढ़हा आ रहा अकास, शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देखकर
उत्तर - जल्दी से सही पता न मिलने पर हो सकता है कि कवि की परेशानियाँ बढ़ जाएँ। हो सकता है उसे बिलावजह किसी होटल में किराये पर कमरा लेना पड़े, या प्लेटफॉर्म पर रात बितानी पड़े। हो सकता है कि कवी के घर में कोई महत्वपूर्ण काम चल रहा हो। ऐसे में यदि कोई परिचित देख ले और आवाज लगा दे तो कवि का काम आसान हो जाएगा।

प्रश्न अभ्यास (खुशबू रचते हैं हाथ)-
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -
प्रश्न 1 - 'खुशबू रचनेवाले हाथ' कैसी परिस्थितियों में तथा कहाँ कहाँ रहते हैं?

उत्तर - 'खुशबू रचनेवाले हाथ' अर्थात अगरबत्ती बनाने वाले गरीब तबके के लोग होते हैं। ऐसे लोग तंग गलियों में, बदबूदार नाले के किनारे और कूड़े के ढ़ेर के बीच रहते हैं। बड़े शहरों की किसी भी झोपड़पट्टी में आपको ऐसा ही नजारा आसानी से देखने को मिलेगा।

प्रश्न 2 - कविता में कितने तरह के हाथों की चर्चा हुई है?
उत्तर - अगरबत्ती बनाने वाले कारीगरों के हाथ तरह-तरह के होते हैं। किसी के हाथों में उभरी हुई नसें होती हैं। किसी के हाथों के नाखून घिसे हुए होते हैं। कुछ बच्चे भी काम करते हैं जिनके हाथ पीपल के नये पत्तों की तरह कोमल होते हैं। कुछ कम उम्र की लड़कियाँ भी होती हैं जिनके हाथ जूही के फूल की डाल की तरह खुशबूदार होते हैं। कुछ कारीगरों के हाथ गंदे, कटे-पिटे और चोट के कारण फटे हुए भी होते हैं।
प्रश्न 3 - कवि ने यह क्यों कहा है कि 'खुशबू रचते हैं हाथ'?
उत्तर - अगरबत्ती का काम है खुशबू फैलाना। ये अगरबत्तियाँ हाथों से बनाई जाती हैं। इसलिए कवि ने कहा है कि 'खुशबू रचते हैं हाथ'।

प्रश्न 4 - जहाँ अगरबत्तियाँ बनती हैं, वहाँ का माहौल कैसा होता है?
उत्तर - जहाँ अगरबत्तियाँ बनती हैं, वहाँ का माहौल अगरबत्ती की मोहक खुशबू के ठीक विपरीत होता है। अगरबत्ती निर्माण एक कुटीर उद्योग है। ज्यादातर कारीगर किसी झोपड़पट्टी में रहते हैं; जहाँ बहुत ज्यादा गंदगी और बदबू होती है।

प्रश्न 5 - इस कविता को लिखने का मुख्य उद्देश्य क्या है?
उत्तर - इस कविता के माध्यम से कवि ने कामगारों और मजदूरों की भयावह जिंदगी को उजागर किया है। कवि ने यह दिखाने की कोशिश की है कि ऐसे मजदूर जो दूसरों के लिए खुशबू या खुशहाली का निर्माण करते हैं खुद कितनी बदहाली में रहते हैं और कितनी विषम परिस्थिति में काम करते हैं।

*-व्याख्या कीजिए -

प्रश्न 1 - पीपल के पत्ते से नए-नए हाथ, जूही की डाल से खुशबूदार हाथ
उत्तर - अगरबत्ती बनाने वाले कारीगरों के हाथ तरह-तरह के होते हैं। किसी के हाथों में उभरी हुई नसें होती हैं। किसी के हाथों के नाखून घिसे हुए होते हैं। कुछ बच्चे भी काम करते हैं जिनके हाथ पीपल के नये पत्तों की तरह कोमल होते हैं। कुछ कम उम्र की लड़कियाँ भी होती हैं जिनके हाथ जूही के फूल की डाल की तरह खुशबूदार होते हैं। कुछ कारीगरों के हाथ गंदे, कटे-पिटे और चोट के कारण फटे हुए भी होते हैं।
प्रश्न 2 - दुनिया की सारी गंदगी के बीच, दुनिया की सारी खुशबू रचते रहते हैं हाथ
उत्तर - जहाँ अगरबत्तियाँ बनती हैं, वहाँ का माहौल अगरबत्ती की मोहक खुशबू के ठीक विपरीत होती है। यह एक विडंबना ही है कि दुनिया की सारी खुशबू उन गलियों में बनती है जहाँ दुनिया भर की गंदगी समाई होती है।

प्रश्न 3 - कवि ने इस कविता में 'बहुवचन' का प्रयोग अधिक किया है? इसका क्या कारण है?
उत्तर - अगरबत्ती हम जब भी खरीदते हैं तो हम कभी एक अगरबत्ती नहीं बल्कि एक पूरा अगरबत्ती का पैकेट खरीदते हैं। उसी तरह, अगरबत्ती बनाने वाले झुंड में काम करते हैं। उनकी समस्याएँ भी अनेक होती हैं। इसलिए कवि ने इस कविता में बहुवचन का प्रयोग अधिक किया है।

प्रश्न 4 - कवि ने हाथों के लिए कौन-कौन से विशेषणों का प्रयोग किया है?
उत्तर - अगरबत्ती बनाने वाले कारीगरों के हाथ किस्म किस्म के होते हैं और उनका वर्णन करने के लिए कवि ने तरह तरह के विशेषणों का उपयोग किया है। कवि ने किसी हाथ की उभरी हुई नसें दिखाई है, तो किसी के घिसे नाखून। किसी हाथ की कोमलता दिखाई है तो किसी की कठोरता।

संचयन - पाठ-6
दीये जल उठे

*-सार-

दिए जल उठे' कहानी आज़ादी के लिए प्रयत्नशील भारत की महत्वपूर्ण घटना पर आधारित है। जब वल्लभभाई पटेल के आह्वान पर पूरा भारत 'दांडी कूच' के लिए तैयार था। इस कूच को असफल बनाने के उद्देश्य से अंग्रेजों ने उनको तीन महीने के कारावास में डाल दिया। गांधी जी को वल्लभभाई पटेल की इस तरह से हुई गिरफ्तारी अच्छी नहीं लगी और उन्होंने स्वयं इस यात्रा का नेतृत्व किया। यह यात्रा साबरमती से आरंभ हुई। गांधी जी बोरसद से होते हुए रास गए वहाँ उन्होंने जनता का आह्वान किया। वहाँ से वह कनकापुरा पहूँचे। इस दांडी कूच का उद्देश्य था लोगों के अंदर आजादी के लिए जोश पैदा करना, सत्याग्रह के जनता को तैयार करना व बिटिश शासन से पूर्णस्वराज की माँग करना। कनकापुरा से नदी आधी रात में पार करनी थी लेकिन आधी रात में अंधेरा इतना गहरा था की कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। तभी गांधीजी व आज़ादी के अन्य सिपाहियों का उत्साह बढ़ाने के लिए नदी के तट पर दोनों ओर हजारों दिए जल उठे। हजारों लोग हाथों में दिए लेकर खड़े हो गए ताकि लोगों को नदी पार करने में कोई परेशानी न हो। यह कहानी उस एकता का साक्ष्य है जो आज़ादी के समय में थी। लोगों का एक ही उद्देश्य था, भारत को गुलामी के बंधन से मुक्त करवाना और अंग्रेजों को भारत से बाहर खदेड़ना।

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर -

प्रश्न 1 - लेखक 'दिए जल उठे' पाठ में किसका वर्णन कर रहा है ?
(क) गाँधी जी का

(ख) दांडी यात्रा का

(ग) दांडी यात्रा की तैयारी का

(घ) गाँधी जी के स्वभाव का

प्रश्न 2 - सरदार वल्लभभाई पटेल ने अपने भाषण में क्या कहा?

(क) लोगों को गाँधी जी का साथ देने को कहा

(ख) दांडी यात्रा में योगदान देने की बात कही

(ग) दांडी यात्रा की तैयारी का वर्णन किया

(घ) लोगों को सत्यग्रह के लिए तैयार रहने को कहा

प्रश्न 3 - सरदार वल्लभभाई पटेल को क्यों गिरफ्तार किया गया?

(क) गाँधी जी का साथ देने के कारण

(ख) मनाही के आदेश की अवहेलना करने के कारण

(ग) दांडी यात्रा की तैयारी पर भाषण देने के कारण

(घ) लोगों को सत्यग्रह के लिए तैयार रहने के लिए कहने के कारण

प्रश्न 4 - सरदार वल्लभभाई पटेल को किसने गिरफ्तार किया?

(क) अंग्रेजी सरकार के आदेश पर

(ख) स्थानीय कलेक्टर शिलिडी के आदेश पर

(ग) अदालत के आदेश पर

(घ) गाँधी जी के आदेश पर

प्रश्न 5 - जज को अपना आठ लाइन का फैसला लिखने में कितना समय लगा?

(क) डेढ़ घंटा

(ख) एक घंटा

(ग) ढ़ाई घंटा

(घ) दो घंटे

प्रश्न 6 - जज का फैसला कितनी लाइन का था?

(क) सात

(ख) आठ

(ग) नौ

(घ) पाँच

प्रश्न 7 - जज के फैसले के अनुसार सरदार वल्लभभाई पटेल को क्या सजा सुनाई गई?

(क) 500 रुपए और तीन महीने की सजा

(ख) 500 रुपए और तीन साल की सजा

(ग) 500 रुपए और तीन सप्ताह की सजा

(घ) 500 रुपए और एक साल की सजा

प्रश्न 8 - दांडी कूच के लिए कौन सी तारीख तय की गई थी?

(क) 2 मार्च

(ख) 18 मार्च

(ग) 15 मार्च

(घ) 12 मार्च

प्रश्न 9 - लेखक के अनुसार पुलिस वालों ने गाड़ी को साबरमती आश्रम के आगे क्यों रोका?

(क) गाँधी जी के रोब के कारण

(ख) सरदार वल्लभभाई पटेल के रोब के कारण

(ग) सत्यग्रहियों के कारण

(घ) गाँधी जी के स्वभाव के कारण

प्रश्न 10 - जब गाँधी जी रास पहुँचे तो वहाँ पर गांधी जी का शानदार स्वागत किसने किया?

(क) गाँधी जी के सत्यग्रह के साथियों ने

(ख) दरबार समुदाय के लोगों ने

(ग) गोपालदास और रविशंकर महाराज

(घ) अब्बास तैयबजी ने

*-प्रश्नोंत्तर -

1: किस कारण से प्रेरित हो स्थानीय कलेक्टर ने पटेल को गिरफ्तार करने का आदेश दिया?

उत्तर: वहाँ पर निषेधाज्ञा लागू थी और इसलिए कोई भी सभा करना मना था। पटेल ने निषेधाज्ञा तोड़ी थी।

इसलिए स्थानीय कलेक्टर ने पटेल को गिरफ्तार करने का आदेश दिया।

2: जज को पटेल की सजा के लिए आठ लाइन के फैसले को लिखने में डेढ़ घंटा क्यों लगा? स्पष्ट करें।

उत्तर: जब पटेल को जज के सामने पेश किया गया तो उन्होंने अपना अपराध कबूल कर लिया। जज की

समझ में नहीं आ रहा था कि पटेल को किस धारा के अंतर्गत सजा सुनाई जाए। इसी उधेड़बुन में जज को

फैसला लिखने में डेढ़ घंटा लग गया।

3: "मैं चलता हूँ। अब आपकी बारी है।" - यहाँ पटेल के कथन का आशय उद्धत पाठ के संदर्भ में स्पष्ट

कीजिए।

उत्तर: इस पाठ में जिस आंदोलन की बात की गई है, वह एक बहुत ही बड़ा आंदोलन था। कोई भी बड़ा आंदोलन केवल एक व्यक्ति द्वारा संपन्न नहीं होता है। इस काम में हजारों, लाखों लोगों के मेहनत की आवश्यकता होती है। पटेल उस आंदोलन के एक मुख्य नेता थे लेकिन उनकी गिरफ्तारी से वह आंदोलन रुकने वाला नहीं था। पटेल को पता था कि उनकी अनुपस्थिति में गांधीजी समेत बाकी नेता और कार्यकर्ता उस आंदोलन को आगे बढ़ाएँगे। इसलिए पटेल ने ऐसा कहा।

4: "इनसे आप लोग त्याग और हिम्मत सीखें" - गांधीजी ने यह कथन किसके लिए और किस संदर्भ में कहा?

उत्तर: गांधीजी ने यह बात दरबार समुदाय के लोगों के बारे में कही थी। दरबार लोग रियासती होते थे। उनका जीवन ऐशो आराम में कटता था। फिर भी वे सबकुछ छोड़कर रास में रहने के लिए चले आये थे। इसलिए गांधीजी ने ऐसा कहा।

5: पाठ द्वारा यह कैसे सिद्ध होता है कि - "कैसी भी कठिन परिस्थिति हो उसका सामना तात्कालिक सूझबूझ और आपसी मेलजोल से किया जा सकता है।" अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: माही नदी को पार करने में कई दिक्कतें थीं। उस नदी को रात में पार करने का विचार किया गया ताकि पानी का स्तर ऊँचा हो और कीचड़ में न चलना पड़े। रात के घुप्प अंधेरे में कमजोर दियों की कोई औकात नहीं थी। लोगों ने हजारों दिये जला लिए जिससे काम भर की रोशनी हो गई। उसी रोशनी में गांधीजी समेत अन्य लोगों ने नदी पार किया। स्मरण रहे कि उस जमाने में वहाँ पर कोई बिजली या जनरेटर नहीं था। यह प्रकरण दिखाता है कि तात्कालिक सूझबूझ और आपसी मेलजोल से कठिन परिस्थिति का भी सामना किया जा सकता है।

6: महिसागर नदी के दोनों किनारों पर कैसा दृश्य उपस्थित था? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

उत्तर: महिसागर नदी के दोनों ओर का रास्ता बड़ा ही दुर्गम था क्योंकि वहाँ कीचड़ से होकर गुजरना पड़ता था। घुप्प अंधेरा छाया हुआ था। लेकिन लगभग हर व्यक्ति के हाथ में एक-एक दिया था जिससे झिलमिल रोशनी की कतारें नजर आ रहीं थीं। लगता था कि मार्च के महीने में ही नदी के दोनों किनारों पर दिवाली मनाई जा रही हो। उस रात के अंधेरे में भी हजारों लोगों के कोलाहल से उनका उत्साह साफ मालूम हो रहा था।

7: "यह धर्मयात्रा है। चलकर पूरी करूँगा।" - गांधीजी के इस कथन द्वारा उनके किस चारित्रिक गुण का परिचय प्राप्त होता है?

उत्तर: गांधीजी अपनी धुन के पक्के व्यक्ति थे। वे एक बार किसी काम पर लग जाते थे तो उसे तब तक करते रहते थे जब तक कि उनका काम पूरा न हो जाए। इस बीच आने वाली हर कठिनाई का सामना करने के लिए वे तैयार रहते थे। वह कार्यकर्ताओं और जनता के साथ रहकर उनके जैसी परिस्थितियों का सामना करने को तैयार रहते थे।

8: गांधी को समझने वाले वरिष्ठ अधिकारी इस बात से सहमत नहीं थे कि गांधी कोई काम अचानक और चुपके से करेंगे। फिर भी उन्होंने किस डर से और क्या एहतियाती कदम उठाए?

उत्तर: ब्रिटिश अधिकारी इस बात से आश्वस्त थे कि गांधी को जो भी करना होगा वह तय कार्यक्रम के अनुसार ही करेंगे। फिर भी रास्ते में कई ऐसे स्थान पड़ते थे जहाँ आसानी से नमक बनाया जा सकता था। उन्हें शायद इस बात का डर रहा होगा कि गांधीजी कहीं जनता के दबाव में आकर तय समय से पहले ही नमक बना दें। इसलिए ब्रिटिश अधिकारी कोई खतरा नहीं उठाना चाहते थे।

9: गांधीजी के पार उतरने पर भी लोग नदी तट पर क्यों खड़े रहे?

उत्तर: गांधीजी के पार उतरने के बाद भी कई सत्याग्रहियों को नदी पार करना बाकी था। और लोगों के भी आने की संभावना थी। इसलिए गांधीजी के पार उतरने के बाद भी लोग नदी तट पर खड़े रहे।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.गांधी जी और पटेल की मुलाकात आश्रम के सामने सड़क पर क्यों हुई?
उत्तर-सरदार पटेल को बोरसद की अदालत में 500 रुपए जुर्माने के साथ तीन महीने की जेल की सजा हुई। इसके लिए उन्हें अहमदाबाद की साबरमती जेल में लाया जा रहा था। जेल का रास्ता आश्रम से होकर जाता था। गांधी जी उनसे मिलने आश्रम से बाहर सड़क पर आ गए थे, जहाँ दोनों नेताओं की मुलाकात हुई।
प्रश्न 2.रास में गांधी जी ने लोगों से सरकारी नौकरी के संबंध में क्या आह्वान किया?
उत्तर-रास में गांधी जी ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि पटेल को यह सज़ा आपकी सेवा के पुरस्कार के रूप में मिली है। ऐसे में कुछ मुखी और तलाटी अब भी सरकारी नौकरी से चिपके हुए हैं। उन्हें भी अपने निजी तुच्छ स्वार्थ भूलकर इस्तीफा दे देना चाहिए।
प्रश्न 3.नदी पार करने के लिए सत्याग्रहियों ने रात दस बजे के बाद का समय क्यों चुना?
उत्तर-मही नदी के दोनों ओर दूर-दूर तक दलदल और कीचड़ था। इसी कीचड़ एवं दलदल में कई किलोमीटर पैदल चलकर नाव तक पहुँचना था। रात बारह बजे समुद्र का पानी नदी में चढ़ आता है जिससे कीचड़ एवं दलदल पर पानी भर जाता है और नाव चलने योग्य हो जाती है।
प्रश्न 4.रघुनाथ काका ने सत्याग्रहियों की मदद किस तरह की?
उत्तर-रघुनाथ काका ने गांधी जी एवं अन्य सत्याग्रहियों को नदी पार कराने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। वे एक नई नाव खरीदकर कनकापुरा पहुँच गए। गांधी जी उस नाव पर सत्याग्रहियों के साथ सवार हुए और रघुनाथ काका नाव चलाते हुए दूसरे किनारे पर ले गए।
प्रश्न 5.सरदार पटेल की गिरफ्तारी पर देश में क्या-क्या प्रतिक्रिया हुई ?
उत्तर-रास में मजिस्ट्रेट द्वारा निषेधाज्ञा लगवाकर गिरफ्तार करवाने से देश में अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध तरह-तरह की प्रतिक्रियाएँ हुईं। मदनमोहन मालवीय ने केंद्रीय असेंबली में प्रस्ताव पेश किया, जिसमें पटेल पर मुकदमा चलाए बिना जेल भेज देने की निंदा की गई। इसी प्रस्ताव के संबंध में मोहम्मद अली जिन्ना ने कहा था कि सरदार बल्लभ भाई की गिरफ्तारी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के सिद्धांत पर है। गांधी जी भी पटेल की इस तरह की गिरफ्तारी से बहुत क्षुब्ध थे।
प्रश्न 6.महिसागर के दूसरे तट की स्थिति कैसी थी? 'दिये जल उठे' पाठ के आधार पर लिखिए।
उत्तर-महिसागर के दूसरे तट की स्थिति भी पहले तट के जैसी ही थी। यहाँ की जमीन भी दलदली और कीचडयुक्त थी। यहाँ भी गांधी जी को करीब डेढ़ किलोमीटर तक पानी और कीचड़ में चलकर किनारे पहुँचना पड़ा। यहाँ भी गांधी जी के विश्राम के लिए झोपड़ी पहले से तैयार कर दी गई थी।
प्रश्न 7.गांधी जी के प्रति ब्रिटिश हुक्मरान किस तरह की राय रखते थे?
उत्तर-गांधी जी के प्रति ब्रिटिश हुक्मरान दो प्रकार की राय रखते थे। इनमें से एक वर्ग को ऐसा लगता था कि गांधी जी अचानक नमक बनाकर कानून तोड़ देंगे, जबकि गांधी जी को निकट से जानने वाले अधिकारी इस बात से सहमत न थे। उनका मानना था कि गांधी जी इस तरह कोई काम चुपके से नहीं करेंगे।
प्रश्न 8.कनकापुरा में गांधी जी की सभा के बाद आगे की यात्रा में परिवर्तन क्यों कर दिया गया?
उत्तर-कनकापुरा में गांधी जी की सभा के बाद आगे की यात्रा में इसलिए परिवर्तन कर दिया गया क्योंकि नदी में आधी रात के समय समुद्र का पानी चढ़ आता था। इससे कीचड़ और दलदल में

कम चलना पड़ता। इसके विपरीत नदी में पानी कम होने पर नाव तक पहुँचने के लिए ज्यादा दूरी कीचड़ और दलदल में तय करनी पड़ती।

प्रश्न 9.महिसागर नदी का किनारा उस दिन अन्य दिनों से किस तरह भिन्न था? इस अद्भुत दृश्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर-गांधीजी और अन्य सत्याग्रही पानी चढ़ने का इंतजार कर रहे थे। रात बारह बजे महिसागर नदी का किनारा भर गया, गांधीजी झोपड़ी से बाहर आए और घुटनों तक पानी में चलकर नाव तक पहुँचे। इसी बीच महात्मागांधी की जय, नेहरु जी की जय, सरदार पटेल की जय के नारों के बीच नाव रवाना हुई । इसे रघुनाथ काका चला रहे थे। कुछ ही देर में नदी के दूसरे किनारे से भी ऐसी ही आवाज़ गूंजने लगी।

प्रश्न 10.कनकापुरा की जनसभा में गांधी जी ने अंग्रेज़ सरकार के बारे में क्या कहा?

उत्तर-कनकापुरा की जनसभा में गांधी जी ने अंग्रेज़ सरकार और उसके कुशासन के बारे में यह कहा कि इस राज में रंक से राजा तक सभी दुखी हैं। राजे-महाराजे भी उसी तरह नाचने को तैयार हैं, जैसे सरकार नचाती है। यह राक्षसी राज है। इसका संहार करना चाहिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं और किन मानवीय मूल्यों के कारण गांधी जी देशभर में लोकप्रिय हो गए थे?

उत्तर-गांधी जी सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। वे झूठ एवं छल का सहारा लेकर कोई काम नहीं करते थे। उनकी इस चारित्रिक विशेषता को भारतीय ही नहीं अंग्रेज़ भी समझते थे। इसके अलावा गांधी जी अपने आराम के लिए दूसरों को कष्ट नहीं देना चाहते थे। स्वाधीनता की लड़ाई को वे धार्मिक कार्य मानकर निष्ठा, लगन, ईमानदारी से कर रहे थे। उनके उदार स्वभाव, दूसरों की मदद करने की प्रवृत्ति और सेवा भावना ने उन्हें देशभर में लोकप्रिय बना दिया। अपने नेतृत्व क्षमता के कारण वे स्वाधीनता आंदोलन के अगुआ थे। उनके एक आह्वान पर देश उनके पीछे चल देता था। इस प्रकार कार्य के प्रति समर्पण, उदारता, परोपकारिता, सत्यवादिता आदि मानवीय मूल्यों के कारण वे देशभर में लोकप्रिय हो गए थे।

प्रश्न 2.सरदार पटेल के चरित्र से आप किन-किन मूल्यों को अपनाना चाहेंगे?

उत्तर-सरदार बल्लभ भाई पटेल देश को आजादी दिलाने वाले नेताओं में प्रमुख स्थान रखते थे। वे अत्यंत जुझारू प्रवृत्ति के नेता थे। त्याग, साहस, निष्ठा, ईमानदारी जैसे मानवीय मूल्य उनमें कूट-कूटकर भरे थे। उनमें गजब की नेतृत्व क्षमता थी। उनके चरित्र से मैं नि:स्वार्थ भाव से काम करने की प्रवृत्ति, कार्य के प्रति समर्पण, साहस, ईमानदारी और कार्य के प्रति जुझारूपन दिखाने जैसे मानवीय मूल्यों को अपनाना चाहूँगा। मैं अपने राष्ट्र के लिए उनके समान तन-मन और धन त्यागने का गुण एवं साहस बनाए रखना चाहूँगा। दिये जल उठे

प्रश्न 3.पटेल और गांधी जी जैसे नेताओं ने देश के लिए अपना चैन तक त्याग दिया था। आप अपने देश के लिए क्या करना चाहेंगे?

उत्तर-गांधी और पटेल अत्यंत उच्च कोटि के देशभक्त एवं नेता था। उनके जैसा त्याग करना सामान्य आदमी के बस की बात नहीं। उनमें नि:स्वार्थ काम करने की जन्मजात भावना थी। उन्हीं लोगों से प्रेरित होकर मैं अपने देश के लिए निम्नलिखित कार्य करना चाहूँगा-

मैं अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दूंगा।
अपने देश से प्रेम और सच्चा लगाव रबँगा।
अपने देश की बुराई भूलकर भी नहीं करूंगा, न सुनूंगा।
देश को साफ़-सुथरा बनाने का प्रयास करूंगा।
देश की समस्याओं के समाधान में अपना योगदान दूंगा।
देश की उन्नति एवं शान बढ़ाने वाले काम करूंगा।

प्रश्न 4.नेहरू जी गांधी जी से कब मिलना चाहते थे? इस पर गांधी जी ने क्या कहा?

उत्तर-नेहरू जी 21 मार्च को होने वाली अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक से पहले गांधी जी से मिलना चाहते थे। इस पर गांधी जी ने कहा कि उन तक पहुँचना कठिन है। तुमको पूरी एक रात का जागरण करना पड़ेगा। अगर कल रात से। पहले वापस लौटना चाहते हो, तो इससे बचा भी नहीं जा सकता। मैं उस समय जहाँ भी रहूँगा, संदेशवाहक तुमको वहाँ तक ले आएगा। इस प्रयाण की कठिनतम घड़ी में तुम मुझसे मिल रहे हो। तुमको रात के लगभग दो बजे जाने-परखे मछुआरों के कंधों पर बैठकर एक धारा पार करनी पड़ेगी। मैं राष्ट्र के प्रमुख सेवक के लिए भी प्रयाण में जरा भी विराम नहीं दे सकता।

प्रश्न 5.रास की जनसभा में गांधी जी ने लोगों को किस तरह स्वतंत्रता के प्रति सचेत किया?

उत्तर-रास की आबादी करीब तीन हज़ार थी, लेकिन उनकी जनसभा में बीस हजार से ज्यादा लोग थे। अपने भाषण में गांधी ने पटेल की गिरफ़्तारी का जिक्र करते हुए कहा, "सरदार को यह सज़ा आपकी सेवा के पुरस्कार के रूप में मिली है। उन्होंने सरकारी नौकरियों से इस्तीफ़े का उल्लेख किया और कहा कि कुछ मुखी और तलाटी 'गंदगी पर मक्खी की तरह' चिपके हुए हैं। उन्हें भी अपने निजी तुच्छ स्वार्थ भूलकर इस्तीफा दे देना चाहिए।" उन्होंने कहा, "आप लोग कब तक गाँवों को चूसने में अपना योगदान देते रहेंगे। सरकार ने जो लूट मचा रखी है उसकी ओर से क्या अभी तक आपकी आँखें खुली
नहीं हैं?"

प्रश्न 6.रासे में गांधी जी को किस तरह स्वागत हुआ? उन्होंने रास में रहने वाले दरबारों का उदाहरण किस संदर्भ में दिया?

उत्तर-रास में गांधी का भव्य स्वागत हुआ। दरबार समुदाय के लोग इसमें सबसे आगे थे। दरबार गोपालदास और रविशंकर महाराज वहाँ मौजूद थे। गांधी ने अपने भाषण में दरबारों को खासतौर पर उल्लेख किया। कुछ दरबार रास में रहते हैं, पर उनकी मुख्य बस्ती कनकापुरा और उससे सटे गाँव देवण में है। दरबार लोग रियासतदार होते थे। उनकी साहबी थी, ऐशो-आराम की ज़िंगदी थी, एक तरह का राजपाट था। दरबार सब कुछ छोड़कर यहाँ आकर बस गए। गांधी ने कहा, "इनसे आप त्याग और हिम्मत सीखें।

पाठ-8-"शुक्रतारे के समान"
लेखक - स्वामी आनंद

लेखक परिचय
लेखक - स्वामी आनंद
जन्म - 1887

*-शुक्रतारे के समान पाठ सार

लेखक कहता है कि आकाश के तारों में शुक्र का कोई जोड़ नहीं है कहने का तात्पर्य यह है कि शुक्र तारा सबसे अनोखा है। भाई महादेव जी आधुनिक भारत की स्वतंत्रता के उषा काल में अपनी वैसी ही चमक से हमारे आकाश को जगमगाकर, देश और दुनिया को मुग्ध करके, शुक्र तारे की तरह ही अचानक अस्त हो गए अर्थात उनका निधन हो गया। लेखक यह भी कहता है कि सेवा-धर्म का पालन करने के लिए इस धरती पर जन्मे स्वर्गीय महादेव देसाई गांधीजी के मंत्री थे। गांधीजी के लिए महादेव पुत्र से भी अधिक थे। लेखक कहता है कि सन् 1919 में जलियाँवाला बाग के हत्याकांड के दिनों में पंजाब जाते हुए गांधीजी को पलवल स्टेशन पर गिरफ़तार किया गया था। गांधीजी ने उसी समय महादेव भाई को अपना वारिस कहा था।

लाहौर के मुख्य राष्ट्रीय अंग्रेज़ी दैनिक पत्र 'ट्रिब्यून'के संपादक श्री कालीनाथ राय को 10 साल की जेल की सज़ा मिली। लेखक कहता है कि गांधीजी के सामने ज़ुल्मों और अत्याचारों की कहानियाँ पेश करने के लिए आने वाले पीड़ितों के दल-के-दल गामदेवी के मणिभवन पर इकट्ठे आते रहते थे। महादेव उनकी बातों को विस्तार से सुनकर छोटे रूप में तैयार करके उनको गांधीजी के सामने पेश करते थे और आने वालों के साथ गांधीजी की आमने-सामने मुलाकातें भी करवाते थे।

लेखक कहता है कि शंकर लाल बैंकर, उम्मर सोबानी और जमनादास द्वारकादास उन दिनों बंबई के तीन नए नेता थे। इनमें अंतिम जमनादास द्वारकादास श्रीमती बेसेंट के अनुयायी थे। ये नेता 'यंग इंडिया' नाम का एक अंग्रेज़ी पत्रिका भी निकालते थे। ये पत्रिका सप्ताह में एक बार निकाली जाती थी।

शंकर लाल बैंकर, उम्मर सोबानी और जमनादास द्वारकादास तीनों नेता गांधीजी को बहुत मानते थे और उनके सत्याग्रह-आंदोलन में मुंबई के बेजोड़ नेता भी थे। जो पूरे आंदोलन के दौरान गांधीजी के साथ ही रहे। इन्होंने गांधीजी से विनती की कि वे 'यंग इंडिया' के संपादक बन जाएँ। गांधीजी को तो इसकी सख्त ज़रूरत थी ही। उन्होंने विनती तुरंत स्वीकार कर ली।

लेखक कहता है कि गांधीजी का काम इतना बढ़ गया कि साप्ताहिक पत्र भी कम पड़ने लगा।

लेखक कहता है कि गांधीजी और महादेव का सारा समय देश घूमने में बीतने लगा। गांधीजी और महादेव जहाँ भी होते, वहाँ से कामों और कार्यक्रमों की भारी भीड़ के बीच भी समय निकालकर लेख लिखते और भेजते थे। लेखक कहता है

कि, भरपूर चैकसाई, ऊँचे-से-ऊँचे ब्रिटिश समाचार-पत्रों की परंपराओं को अपनाकर चलने का गांधीजी का आग्रह और कट्टर से कट्टर विरोधियों के साथ भी पूरी-पूरी सत्यनिष्ठा में से उत्पन्न होने

वाली विनय-विवेक-युक्त विवाद करने की गांधीजी की शिक्षा इन सब गुणों ने तीव्र मतभेदों और विरोधी प्रचार के बीच भी देश-विदेश के सारे समाचार-पत्रों की दुनिया में और एंग्लो-इंडियन समाचार-पत्रों के बीच भी व्यक्तिगत रूप से महादेव को सबका लाड़ला बना दिया था।
क्योंकि महादेव ने सभी कामों को बड़े सही ढंग से सम्भाल रखा था।
लेखक कहता है कि भारत में महदेव के अक्षरों का कोई सानी नहीं था, कोई भी महादेव की तरह सुन्दर लिखावट में नहीं लिख सकता था। यहाँ तक कि वाइसराय के नाम जाने वाले गांधीजी के पत्र हमेशा महादेव की लिखावट में जाते थे। उन पत्रों को देख-देखकर दिल्ली और शिमला में बैठे वाइसराय लंबी साँस-उसाँस लेते रहते थे।
भले ही उन दिनों भारत पर ब्रिटिश सल्तनत की पूरी हुकूमत थी, लेकिन उस सल्तनत के 'छोटे' बादशाह को भी गाँधीजी के सेक्रेटरी यानि महादेव के समान सुन्दर अक्षर लिखने वाला लेखक कहाँ मिलता था? बड़े-बड़े सिविलियन और गवर्नर कहा करते थे कि सारी ब्रिटिश सर्विसों में महादेव के समान अक्षर लिखने वाला कहीं खोजने पर भी मिलता नहीं था। लेखक कहता है कि महादेव का शुद्ध और सुंदर लेखन पढ़ने वाले को मंत्र मुग्ध कर देता था।
लेखक कहता है कि महादेव एक कोने में बैठे-बैठे अपनी लम्बी लिखावट में सारी चर्चा को लिखते रहते थे। मुलाकात के लिए आए हुए लोग अपनी मंज़िल पर जाकर सारी बातचीत को टाइप करके जब उसे गाँधीजी के पास 'ओके' करवाने के लिए पहुँचते, तो भले ही उनमें कुछ भूलें या कमियाँ-ख़ामियाँ मिल जाएँ, लेकिन महादेव की डायरी में या नोट-बही में कोई भी गलती नहीं होती थी यहाँ तक कि कॉमा मात्र की भी भूल नहीं मिलती थी।
लेखक कहता है कि गाँधीजी हमेशा मुलाकात के लिए आए हुए लोगों से कहते थे कि उन्हें अपना लेख तैयार करने से पहले महादेव के लिखे 'नोट' के साथ थोड़ा मिलान कर लेना था, इतना सुनते ही लोग दाँतों अँगुली दबाकर रह जाते थे। लेखक कहता है कि जिस तरह बिहार और उत्तर प्रदेश के हजारों मील लंबे मैदान गंगा, यमुना और दूसरी नदियों के परम उपकारी, सोने की कीमत वाले कीचड़ के बने हैं।
यदि कोई इन मैदानों के किनारे सौ-सौ कोस भी चल लेगा तो भी रास्ते में सुपारी फोड़ने लायक एक पत्थर भी कहीं नहीं मिलेगा। इसी तरह महादेव के संपर्क में आने वाले किसी भी व्यक्ति को ठेस या ठोकर की बात तो दूर रही, खुरदरी मिट्टी या कंकरी भी कभी नहीं चुभती थी, यह उनके कोमल स्वभाव का ही परिणाम था। लेखक कहता है कि उनका यह स्वच्छ स्वभाव उनके संपर्क में आने वाले व्यक्ति को चन्द्रमा और शुक्र की चमक की तरह मानो दूध से नहला देती थी।
लेखक कहता है कि उनके स्वाभाव में डूबने वाले के मन से उनकी इस मोहिनी का नशा कई-कई दिन तक नहीं उतरता था। महादेव का पूरा जीवन और उनके सारे कामकाज गांधीजी के साथ इस तरह से मिल गए थे कि गांधीजी से अलग करके अकेले उनकी कोई कल्पना ही नहीं की जा सकती थी। लेखक कहता है कि सन् 1934-35 में गांधीजी वर्धा के महिला आश्रम में और मगनवाड़ी में रहने के बाद अचानक मगनवाड़ी से चलकर सेगाँव की सरहद पर लगे एक पेड़ के नीचे जा बैठे।

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1 - आकाश के तारों में सबसे अनोखा तारा किसे कहा गया है?

(A) मंगल
(B) शुक्र
(C) चन्द्रमा
(D) ध्रुव

प्रश्न 2 - शुक्र तारे को किस का साथी माना गया है?
(A) मंगल
(B) सूर्य
(C) चन्द्रमा
(D) सांय काल का

प्रश्न 3 - शुक्र तारे की तरह चमकदार किसे कहा गया है?
(A) महादेव को
(B) गांधीजी को
(C) लेखक को
(D) इनमें से किसी को नहीं

प्रश्न 4 - मित्रों के बीच मज़ाक में अपने को गांधीजी का कुली कहने में और कभी-कभी अपना परिचय उनके खाना पकाने वाले, मशक से पानी ढोने वाले व्यक्ति अथवा गधे के रूप में देने में भी वे गौरव का अनुभव किया करते थे।
(A) कुली
(B) खाना पकाने वाला
(C) मशक से पानी ढोने वाला व्यक्ति
(D) उपरोक्त सभी

प्रश्न 6 - 'क्रानिकल' के निडर अंग्रेज़ संपादक हार्नीमैन को सरकार ने देश-निकाले की सज़ा देकर इंग्लैंड क्यों भेज दिया?
(A) क्योंकि वे सुस्त थे
(B) अपना काम निष्ठा से नहीं करते थे
(C) निडरता से अपना कर्तव्य निभाते थे
(D) गद्दारी करते हुए पकड़े गए थे

प्रश्न 7 - गांधीजी की प्रतिदिन की गतिविधियों पर कौन नज़र बनाए रखते थे?
(A) महादेव
(B) शंकर लाल बैंकर
(C) लेखक
(D) उम्मर सोबानी

प्रश्न 8 - महादेव के घनिष्ट मित्र कौन थे?

(A) लेखक

(B) गांधीजी

(C) सम्पादक

(D) नरहरि भाई

प्रश्न 9 - नरहरि भाई और महादेव ने साथ-साथ किसकी पढ़ाई की थी?

(A) सम्पादकीय

(B) वकालत

(C) स्नाकोत्तर

(D) हिंदी-अनुवाद

प्रश्न 10 - महादेव का किस चीज़ में कोई मुकाबला नहीं कर सकता था?

(A) बोलने में

(B) काम करने में

(C) लिखावट में

(D) चलने में

*-प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.महादेव भाई अपना परिचय किस रूप में देते थे?

उत्तर-महादेव भाई अपना परिचय गाँधी जी के 'पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर' के रूप में देते थे।

प्रश्न 2.'यंग इंडिया' साप्ताहिक में लेखों की कमी क्यों रहने लगी थी?

उत्तर-अंग्रेजी संपादक हार्नीमैन 'यंग इंडिया' के लिए लिखते थे, जिन्हें देश निकाले की सजा देकर इंग्लैंड भेज दिया था। इस कारण 'यंग इंडिया' साप्ताहिक में लेखों की कमी रहने लगी।

प्रश्न 3.गांधी जी ने 'यंग इंडिया' प्रकाशित करने के विषय में क्या निश्चय किया?

उत्तर-गाँधी जी ने 'यंग इंडिया' को सप्ताह में दो बार प्रकाशित करने का निश्चय किया।

प्रश्न 4.गांधी जी से मिलने से पहले महादेव भाई कहाँ नौकरी करते थे?

उत्तर-गांधी जी से मिलने से पहले महादेव भाई भारत सरकार के अनुवाद विभाग में नौकरी करते थे।

प्रश्न 5.महादेव भाई के झोलों में क्या भरा रहता था?

उत्तर-महादेव भाई के झोलों में ताजी राजनीतिक घटनाओं, जानकारियों, चर्चाओं से संबंधित पुस्तकें, समाचार पत्र, मासिक पत्र आदि भरे रहते थे।

प्रश्न 6.महादेव भाई ने गांधी जी की कौन-सी प्रसिद्ध पुस्तक का अनुवाद किया था?

उत्तर-महादेव भाई ने गांधी जी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' का अंग्रेजी अनुवाद किया।

प्रश्न 7.अहमदाबाद से कौन-से दो साप्ताहिक निकलते थे?

उत्तर-अहमदाबाद से निकलने वाले साप्ताहिक पत्र थे-'यंग इंडिया' तथा 'नव जीवन'।

प्रश्न 8.महादेव भाई दिन में कितनी देर काम करते थे?
उत्तर-महादेव भाई लगातार चलने वाली यात्राओं, मुलाकातों, चर्चाओं और बातीचत में अपना समय बिताते थे। इस प्रकार वे 18-20 घंटे तक काम करते थे।
प्रश्न 9.महादेव भाई से गांधी जी की निकटता किस वाक्य से सिद्ध होती है?
उत्तर-महादेव भाई से गाँधी जी की निकटता इस बात से सिद्ध होती है कि वे बाद के सालों में प्यारेलाल को बुलाते हुए 'महादेव' पुकार बैठते थे।
(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-
प्रश्न 1.गांधी जी ने महादेव को अपना वारिस कब कहा था?
उत्तर-महादेव भाई 1917 में गांधी के पास पहुँचे। गांधी जी ने उनको पहचानकर उन्हें उत्तराधिकारी का पद सौंपा था। 1919 में जलियाँबाग कांड के समय जब गांधी जी पंजाब जा रहे थे तब उन्हें गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने उसी समय महादेव भाई। को अपना वारिस कहा था।
प्रश्न 2.गांधी जी से मिलने आनेवालों के लिए महादेव भाई क्या करते थे?
उत्तर-महादेव भाई पहले उनकी समस्याओं को सुनते थे। उनकी संक्षिप्त टिप्पणी तैयार करके गाँधी जी के सामने पेश । करते थे तथा उनसे लोगों की मुलाकात करवाते थे।
प्रश्न 3.महादेव भाई की साहित्यिक देन क्या है?
उत्तर-महादेव भाई ने गांधी जी की गतिविधियों पर टीका-टिप्पणी के अलावा 'सत्य के प्रयोग' का अंग्रेजी अनुवाद किया। इसके अलावा 'चित्रांगदा', 'विदाई का अभिशाप', 'शरद बाबू की कहानियाँ' आदि का अनुवाद उनकी साहित्यिक देन है।
प्रश्न 4.महादेव, भाई की अकाल मृत्यु को कारण क्या था?
उत्तर-महादेव भाई की अकाल मृत्यु को कारण उनकी व्यस्तता तथा विवशता थी। सुबह से शाम तक काम करना और गरमी की ऋतु में ग्यारह मील पैदल चलना ही उनकी मौत का कारण बने।
प्रश्न 5.महादेव भाई के लिखे नोट के विषय में गांधी जी क्या कहते थे?
उत्तर-महादेव भाई के द्वारा लिखित नोट बहुत ही सुंदर और इतने शुद्ध होते थे कि उनमें कॉमी और मात्रा की भूल और छोटी गलती भी नहीं होती थी। गांधी जी दूसरों से कहते कि अपने नोट महादेव भाई के लिखे नोट से ज़रूर मिला लेना।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1.पंजाब में फ़ौजी शासन ने क्या कहर बरसाया?
उत्तर-पंजाब में फ़ौजी शासन ने काफी आतंक मचाया। पंजाब के अधिकतर नेताओं को गिरफ्तार किया गया। उन्हें उम्र कैद की सज़ा देकर काला पानी भेज दिया गया। 1919 में जलियाँवाला बाग में सैकड़ों निर्दोष लोगों को गोलियों से भून दिया गया। 'ट्रिब्यून' के संपादक श्री कालीनाथ राय को 10 साल की जेल की सज़ा दी गई।
प्रश्न 2.महादेव जी के किन गुणों ने उन्हें सबका लाडला बना दिया था?
उत्तर-महादेव भाई गांधी जी के लिए पुत्र के समान थे। वे गांधी का हर काम करने में रुचि लेते थे। गांधी जी के साथ देश भ्रमण तथा विभिन्न गतिविधियों में हिस्सा लेते थे। वे गांधी जी की गतिविधियों पर टिप्पणी करते थे। महादेव जी की लिखावट बहुत सुंदर, स्पष्ट थी। वे इतना शुद्ध

लिखते थे कि उसमें मात्रा और कॉमा की भी अशुधि नहीं होती थी। वे पत्रों का जवाब जितनी शिष्टता से देते थे, उतनी ही विनम्रता से लोगों से मिलते थे। वे विरोधियों के साथ भी उदार व्यवहार करते थे। उनके इन्हीं गुणों ने उन्हें सभी का लाडला बना दिया।

प्रश्न 3.महादेव जी की लिखावट की क्या विशेषताएँ थीं?

उत्तर-पूर्णत: शुद्ध और सुंदर लेख लिखने में महादेव भाई का भारत भर में कोई सानी नहीं था। वे तेज़ गति से लंबी लिखाई कर सकते थे। उनकी लिखावट में कोई भी गलती नहीं होती थी। लोग टाइप करके लाई 'रचनाओं को महादेव की रचनाओं से मिलाकर देखते थे। उनके लिखे लेख, टिप्पणियाँ, पत्र और गाँधीजी के व्याख्यान सबके सब ज्यों-के-ज्यों प्रकाशित । होते थे।

(ग) निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1.'अपना परिचय उनके 'पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर' के रूप में देने में वे गौरवान्वित महसूस करते थे।'

उत्तर-आशय-महादेव भाई गांधी जी के निजी सचिव और निकटतम सहयोगी थे। इसके बाद भी उन्हें अभिमान छू तक न गया था। वे गांधी जी के प्रत्येक काम को करने के लिए तैयार रहते थे। वे गांधी जी की प्रत्येक गतिविधि, उनके भोजन और दैनिक कार्यों में सदैव साथ देते थे। वे स्वयं को गांधी का सलाहकार, उनका रसोइया, मसक से पानी ढोने वाला तथा बिना विरोध के गधे के समान काम करने वाला मानते थे।

प्रश्न 2.इस पेशे में आमतौर पर स्याह को सफेद और सफ़द को स्याह करना होता था।

उत्तर-महादेव ने गाँधी जी के सान्निध्य में आने से पहले वकालत का काम किया था। इस काम में वकीलों को अपना केस जीतने के लिए सच को झूठ और झूठे को सच बताना पड़ता है। इसलिए कहा गया है कि इस पेशे में स्याह को सफ़ेद और सफ़ेद को स्याह करना होता था।

प्रश्न 3.देश और दुनिया को मुग्ध करके शुक्रतारे की तरह ही अचानक अस्त हो गए।

उत्तरआशय- नक्षत्र मंडल में करोड़ों तारों के मध्य शुक्रतारा अपनी आभा-प्रभा से सभी का ध्यान अपनी ओर खींच लेता है, भले ही उसका चमक अल्पकाल के लिए हो। यही हाल महादेव भाई देसाई का था। उन्होंने अपने मिलनसार स्वभाव, मृदुभाषिता, अहंकार रहित विनम्र स्वभाव, शुद्ध एवं सुंदर लिखावट तथा लेखक की मनोहारी शैली से सभी का दिल जीत लिया था। अपनी असमय मृत्यु के कारण वे कार्य-व्यवहार से अपनी चमक बिखेर कर अस्त हो गए।

प्रश्न 4.उन पत्रों को देख-देखकर दिल्ली और शिमला में बैठे वाइसराय लंबी साँस-उसाँस लेते रहते थे।

उत्तर-महादेव इतनी शुद्ध और सुंदर भाषा में पत्र लिखते थे कि देखने वालों के मुँह से वाह निकल जाती थी। गाँधी जी के पत्रों का लेखन महादेव करते थे। वे पत्र जब दिल्ली व शिमला में बैठे वाइसराय के पास जाते थे तो वे उनकी सुंदर लिखावट देखकर दंग रह जाते थे।

व्याकरण भाग :-

1-विराम चिन्ह:-

हिंदी में प्रचलित प्रमुख विराम चिह्न

(1) अल्प विराम)Comma)(,)

(2) अर्द्ध विराम)Semi colon) (;)

(3) पूर्ण विराम)Full-Stop) (। (

(4) उप विराम)Colon) [:]

(5) विस्मयादिबोधक चिह्न)Sign of Interjection)(!)

(6) प्रश्नवाचक चिह्न)Question mark) (?)

(7) कोष्ठक)Bracket) (())

(8) योजक चिह्न)Hyphen) (-)

(9) अवतरण चिह्न या उद्धरणचिह्न)Inverted Comma) ("... ")

(10) लाघव चिह्न)Abbreviation sign) (o)

(11) आदेश चिह्न)Sign of following) (:-)

(12) रेखांकन चिह्न)Underline) (_)

(13) लोप चिह्न)Mark of Omission)(...)

*-निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम-चिह्न का प्रयोग करते हुए दोबारा लिखिए|

1. लोगों ने मिस्टर शर्मा को एम पी चुन लिया
2. सुभाष चंद्र बोस ने कहा तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा
3. क्या प्रधानाचार्य आज नहीं आए हैं
4. तुलसी ने रामचरित मानस में लिखा है परहित सरसि धर्म नहिं भाई
5. तुम कौन हो कहाँ रहते हो क्या करते हो यह सब मैं क्यों पूछू
6. बूढ़े ने डॉक्टर चड्ढा से कहा इसे एक नज़र देख लीजिए शायद बच जाए
7. कामायनी कवि जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध कृति है
8. उस कवि सम्मेलन में रामधारी सिंह दिनकर, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जैसे कई महान कवि आए थे
9. वसंत ऋतु के त्योहार होली वसंत पंचमी वैसाखी हमें उल्लास से भर जाते हैं
10. हाय फूल सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी
11. क्या कहा तुम अनुत्तीर्ण हो गए
12. रोहन 125 राजौरी गार्डन दिल्ली में रहता है
13. यह पत्र 25 जुलाई 2014 को लिखा गया है

उत्तर-

1. लोगों ने मि. शर्मा को एम.पी. चुन लिया है।
2. सुभाष चंद्र बोस ने कहा, "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा।
3. "क्या आज प्रधानाचार्य नहीं आए हैं?"
4. तुलसी ने 'रामचरित मानस' में लिखा है-'परहित सरसि धर्म नहिं भाई'।
5. तुम कौन हो, कहाँ रहते हो, क्या करते हो, यह सब मैं क्यों पूछू ?
6. बूढ़े ने डॉ. चड्ढा से कहा, "इसे एक नज़र देख लीजिए, शायद बच जाए।''
7. 'कामायनी' कवि जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध कृति है।
8. उस कवि सम्मेलन में रामधारी सिंह 'दिनकर', सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जैसे कई महान कवि आए थे।
9. वसंत ऋतु के त्योहार होली, वसंत पंचमी, बैसाखी हमें उल्लास से भर जाते हैं।
10. हाय! फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी।
11. क्या कहा, तुम अनुत्तीर्ण हो गए!
12. रोहन 125, राजौरी गार्डन, दिल्ली में रहता है।
13. यह पत्र 25 जुलाई, 2014 को लिखा गया है।

*-निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम-चिह्न का प्रयोग करते हुए दुबारा लिखिए

1-हिंदी कविता की सुंदर पंक्ति है जिसके कारण धूलि भरे हीरे कहलाए

2-नीचे को धूरि समान वेद वाक्य नहीं है

3-धूल धूलि धूली धूरि आदि व्यंजनाएँ अलग अलग हैं

4-एक आदमी ने घृणा से कहा क्या ज़माना है जवान लड़के को मरे पूरा दिन नहीं बीता और यह बेहया दुकान
लगा के बैठी है

5-दूसरे साहब कह रहे थे जैसी नीयत होती है अल्ला भी वैसी ही बरकत देता है

6-कल जिसका बेटा चल बसा आज वह बाज़ार में सौदा बेचने चली है हाय रे पत्थर-दिल

7-कर्नल खुल्लर मेरी ओर मुड़कर कहने लगे क्या तुम भयभीत थीं

8-नहीं मैंने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया

9-तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली बचेंद्री

10-साउथ कोल पृथ्वी पर बहुत अधिक कठोर जगह के नाम से प्रसिद्ध है

11-चलो चलते हैं मैंने कहा

12-गांधी जी कहते थे-महादेव के लिखे नोट के साथ थोड़ा मिलान कर लेना था न

13-रामन ने बी ए और एम ए दोनों ही परीक्षाओं में काफी ऊँचे अंक हासिल किए

14-यह जिज्ञासा उनसे सवाल कर बैठी आखिर समुद्र का रंग नीला ही क्यों होता है कुछ और क्यों नहीं